आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

NHIDCL
अवसंरचना निर्माण- राष्ट्र निर्माण

वर्ष 03 अंक 06

सुगम पथ

अप्रैल-जून, 2023

(राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड की गृह पत्रिका)

क्षेत्रीय कार्यालयों में हिन्दी कार्यशाला एवं प्रतियोगिताओं की झलकियां

अवसंरचना निर्माण – राष्ट्र निर्माण

सत्य-सत्यमेवेश्वरो लोके सत्ये धर्मः सदाश्रितः।
सत्यमूलनि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परं पदम्।।
(वाल्मीकि रामायण)

भावार्थ : सत्य ही संसार में ईश्वर है; धर्म भी सत्य के ही आश्रित है; सत्य ही समस्त भव–विभव का मूल है; सत्य से बढ़कर और कुछ नहीं है।

संरक्षक
चंचल कुमार
प्रबंध निदेशक

मार्गदर्शक
अंशु मनीष खलखो
निदेशक (प्रशासन एवं वित्त)

विशेष सलाहकार
संजय कुमार
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

एस.पी. सनवाल,
उप–महाप्रबंधक (प्रशासन)

संपादक
परितोष निगम
सहायक निदेशक (राजभाषा)

परामर्शदाता
विनोद अनुपम

अस्वीकरणः

'सुगम पथ' में प्रकाशित रचनाओं में दिए गए विचार, संबंधित लेखक के अपने हैं। एनएचआईडीसीएल का प्रकाशित विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है। इसके साथ–साथ रचनाओं के मौलिक, अप्रकाशित एवं कॉपीराइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

संपादकीय	2
आलेख :	
गैर–परंपरागत तरीकों का उपयोग करके लोहित नदी के कटाव के कारण राष्ट्रीय राजमार्ग–13 का टूटने से बचाव	3–6
भारतीय रक्षा और राष्ट्रीय राजमार्गों के बीच संबंध	7–8
पिरामिड और ब्रह्माण्डीय अंतरग्रहीय यात्राओं का रहस्य	9–12
कबीर : एक क्रांतिकारी संत	13–14
कविताएं :	
हर्षित हृदय की कामना	15
गुमनाम शहर	15
जीवन की राह	16
पिता	16
विकास की सड़क	17
राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेशों के मुख्य अंश	17–18
प्रमुख गतिविधियां :	
क्षेत्रीय कार्यालय–अगरतला	19
क्षेत्रीय कार्यालय–ईटानगर	20
क्षेत्रीय कार्यालय–आइजोल	21–22
क्षेत्रीय कार्यालय–कोहिमा	23–24
क्षेत्रीय कार्यालय–गंगटोक	25–26
क्षेत्रीय कार्यालय–गुवाहाटी	27–29
क्षेत्रीय कार्यालय–देहरादून	30–31
क्षेत्रीय कार्यालय–शिलोंग	32–33
क्षेत्रीय कार्यालय–जम्मू	34–35
क्षेत्रीय कार्यालय–श्रीनगर	36
क्षेत्रीय कार्यालय–पोर्ट ब्लेयर	37
कॉरपोरेट कार्यालय–नई दिल्ली	38–40

संपादकीय

अप्रैल–जून की तिमाही हिंदी के भविष्य की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण रही है। मई, 2023 के महीने में संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षा का परिणाम आया है। पहली बार इस परीक्षा में हिंदी माध्यम के कुल 54 उम्मीदवार सफल हुए हैं। देश की सबसे प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा में हिंदी माध्यम से सफल होने वाले अभ्यर्थियों की यह अब तक की सबसे बड़ी संख्या है।

हालांकि, संघ लोक सेवा आयोग, सफल अभ्यर्थियों के परीक्षा के माध्यम के विषय में सीधे तौर पर कोई जानकारी नहीं देता है, लेकिन आयोग की वार्षिक रिपोर्ट और लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी के आंकड़े इसका खाका पेश करते हैं। हिंदी माध्यम से सिविल सेवा परीक्षा पास करना हमेशा से ही एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। उल्लेखनीय है कि सिविल सेवा परीक्षा में हिंदी माध्यम का विकल्प तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई के प्रयासों के परिणामस्वरूप आजादी के लगभग 32 वर्षों के बाद 1979 से शुरू हुआ था। शुरुआत के 10–12 वर्षों में सिविल सेवा परीक्षा में हिंदी माध्यम से नाममात्र के ही अभ्यर्थी उत्तीर्ण होते थे। 1990 के बाद से इस संख्या में वृद्धि देखी गई। लेकिन फिर भी अंग्रेजी माध्यम से इस परीक्षा को उत्तीर्ण करने वाले अभ्यर्थियों की तुलना में यह संख्या बहुत कम रही है। अंग्रेजी माध्यम वाले अभ्यर्थियों का हमेशा से इस परीक्षा में दबदबा रहा है।

समाचार–पत्रों में छपी खबरों के अनुसार, 2013 में हिंदी माध्यम से सिविल सेवा की मुख्य परीक्षा में बैठने वालों की संख्या कम होकर मात्र 10 प्रतिशत रह गई थी, जिसके कारण सरकारी स्तर पर परीक्षा के स्वरूप में कुछ बदलाव किए गए थे, लेकिन इसके बावजूद इस संख्या में बहुत अधिक इजाफा नहीं हो सका। पिछले कुछ वर्षों में हिंदी माध्यम से सिविल सेवा की मुख्य परीक्षा देने वालों की संख्या में लगातार गिरावट होती रही है।

विशेषज्ञों के अनुसार, सिविल सेवा (मुख्य) परीक्षा में हिंदी माध्यम के छात्रों की लगातार घटती संख्या का प्रमुख कारण यह है कि आज भी हिंदी में स्तरीय और पर्याप्त अध्ययन सामग्री उपलब्ध नहीं है। इसके साथ–साथ, एक और प्रमुख कारण हिंदी माध्यम के प्रश्नपत्र का निम्न स्तरीय और मशीनी अनुवाद है, जिसके कारण कई बार अभ्यर्थी को प्रश्नपत्र को समझने में खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। उल्लेखनीय है कि अनुवाद का खराब स्तर सरकारी कार्यालयों के कामकाज की भी एक बड़ी समस्या रही है। क्लिष्ट, दुरूह एवं यांत्रिक हिंदी अनुवाद के कारण, राजभाषा हिंदी का प्रयोजन भी पूरी तरह सफल नहीं हो पा रहा है। अनुवाद की गुणवत्ता में सुधार लाने की दिशा में सरकारी और गैर–सरकारी स्तर पर विशेष प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। समाज के प्रबुद्ध वर्ग में भी ऐसी धारणा है कि अंग्रेजी के मुकाबले में हिन्दी एवं अन्य भाषाओं के अभ्यर्थी कम प्रतिभासंपन्न होते हैं–इस प्रकार की नकारात्मक मानसिकता भी कई बार अभ्यर्थियों को सिविल सेवा परीक्षा के लिए हिन्दी माध्यम का चयन करने से रोकती है।

हिंदी माध्यम से सिविल सेवा परीक्षा देने वाले और उत्तीर्ण करने वाले अभ्यर्थियों के पिछले रिकार्ड को देखते हुए, इस बार 54 अभ्यर्थियों की सफलता एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। हिंदी के नजरिये से इस उपलब्धि की एक और विशेषता यह रही है कि हिंदी माध्यम से इन 54 सफल अभ्यर्थियों में से 29 अभ्यर्थियों ने वैकल्पिक विषय के रूप में 'हिंदी साहित्य' का चयन किया था। हिन्दी माध्यम से सिविल सेवा परीक्षा उत्तीर्ण करने वाली ये प्रतिभाएं निश्चित रूप से अपने दायित्वों के साथ राजभाषा हिन्दी की संघर्ष–यात्रा में नए मील के पत्थर स्थापित करेंगी और वह दिन दूर नहीं जब सरकारी कामकाज में हिन्दी की गंगा ऊपर से नीचे की ओर अवश्य प्रवाहित होगी। इसी विश्वास के साथ 'सुगमपथ' का छठा अंक सुधी पाठकों को समर्पित है।

परितोष निगम
संपादक

गैर–परंपरागत तरीकों का उपयोग करके लोहित नदी के कटाव के कारण राष्ट्रीय राजमार्ग–13 का टूटने से बचाव

राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड एक प्रतिष्ठित सरकारी संस्था है, जो देशभर में राजमार्गों और पुल अवसंरचना के विकास में शामिल है। यह मुख्य रूप से अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों और सीमावर्ती क्षेत्रों में कार्य कर रहा है। राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड में इंजीनियरों की एक बड़ी टीम शामिल है, जो राष्ट्रीय राजमार्गों और रणनीतिक सड़कों का विस्तार करती है, निर्माण करती है, बनाए रखती और उनका अनुरक्षण करती है तथा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सीमाओं को आपस में जोड़ती है। राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड की उपस्थिति अरुणाचल प्रदेश सहित पूर्वोत्तर भारतीय राज्यों की 7 बहनों के बीच है, जहाँ साल में लगभग छह महीने की लंबी अवधि तक मानसून का प्रभाव रहता है। विभिन्न सड़कों के बीच, राष्ट्रीय राजमार्ग–13 का हिस्सा क्षेत्रीय कार्यालय–ईटानगर के अधिकार क्षेत्र में आता है। तेजू–ह्युलियांग सड़क जो अंजाव जिले की जीवन रेखा है, राष्ट्रीय राजमार्ग–13 का एक हिस्सा है और यह सशस्त्र बलों के यात्रा के लिए भी महत्वपूर्ण है।

चुनौती

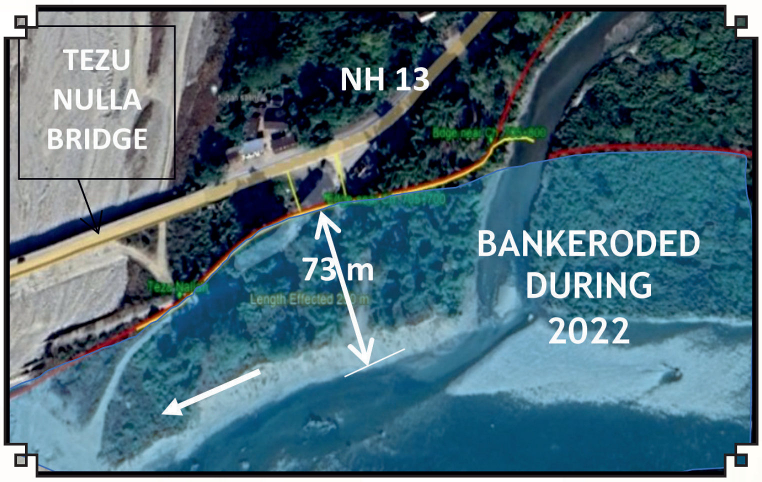

वर्ष 2022 में मध्य मार्च के बाद से भारी वर्षा की शुरूआत हो गई थी। जून–जुलाई–2022 के दौरान, लोहित जिला, अरुणाचल प्रदेश के तेजू नाला के पास राष्ट्रीय राजमार्ग–13 के 705.7 किलोमीटर आरएचएस पर गंभीर क्षरण देखा गया। यह देखकर सभी को आश्चर्य हुआ कि, नदी ने अपने मार्ग को पूरी तरह से बदल दिया है और शक्तिशाली लोहित नदी के बहाव को तेजू नाला स्थान के पास दाहिने किनारे की ओर मोड़ दिया गया है। किनारे के साथ लगते गाँवों में भारी तबाही हुई और निवासियों को स्थानांतरित करना पड़ा। लगातार भारी बारिश के कारण लोहित नदी का जल स्तर लगभग 2 मीटर से 2.5 मीटर तक बढ़ गया।

कटाव (705.700 किलोमीटर आरएचएस पर तेजू–नाला और लोहित नदी संगम बिंदु के पास) खतरनाक दर पर हुआ, जिससे मानसून के कारण राष्ट्रीय राजमार्ग–13 के अपरिहार्य अतिक्रमण को रोकने के लिए कटाव नियंत्रण और नदी नियंत्रण और डायवर्जन कार्य की आवश्यकता हो गई।

जिला प्रशासन, लोहित ने एनएचआईडीसीएल से लोहित नदी के परिवर्तित मार्ग को पीछे धकेलने के लिए उपयुक्त स्थान पर बाढ़ सुरक्षा या मिट्टी कटाव रोधी कार्य करने का अनुरोध किया, ताकि अंजाव जिले, जो कि देश के पूर्वोत्तर भारत का सबसे पूर्वी जिला है, के साथ–साथ कई गांवों को देश के बाकी हिस्सों से अलग होने से बचाया जा सके।

लोहित नदी के परिवर्तित मार्ग से राष्ट्रीय राजमार्ग–13 की दूरी कैरिजवे के किनारे से लगभग 21 मीटर थी। आने वाले दिनों में और बारिश होने से राष्ट्रीय राजमार्ग–13 किमी 705.700 पर टूट

जाता, जिसे किसी भी कीमत पर टाला जाना था।

चुनौती का सामना करने के लिए प्रारंभिक योजना

कठोर स्थल सर्वेक्षण, क्षेत्र में अनुभवी विशेषज्ञों और इंजीनियरों से परामर्श के बाद कार्रवाई की दिशा तय की गई। लागत को कम करने के लिए, समस्या के समाधान के लिए जियो बैग के रूप में तकनीकी कपड़ा, पारगम्य स्पर के लिए कंक्रीट साही जैसे किफायती विकल्पों को शामिल किया गया।

तदनुसार, निम्नलिखित प्रमुख कार्यों की पहचान की गई :–

i) रेत से भरे जियोसिंथेटिक बैग का उपयोग करके राष्ट्रीय राजमार्ग–13 के 705.700 किलोमीटर पर लोहित नदी के आरएचएस तट का कटाव नियंत्रण।

ii) नदी प्रशिक्षण कंक्रीट टेट्राहेड्रल पोरपाइन के उपयोग से नदी के ऊपरी हिस्से में काम करना, जो एक ऐसी तकनीक है, जिसका ब्रह्मपुत्र नदी बेसिन में सफलतापूर्वक उपयोग किया गया है।

iii) क्रेटेड बोल्डर एप्रन के माध्यम से (छोटा नाला धारा में प्रवेश करने से दुरालियांग धारा का मार्ग परिवर्तन)।

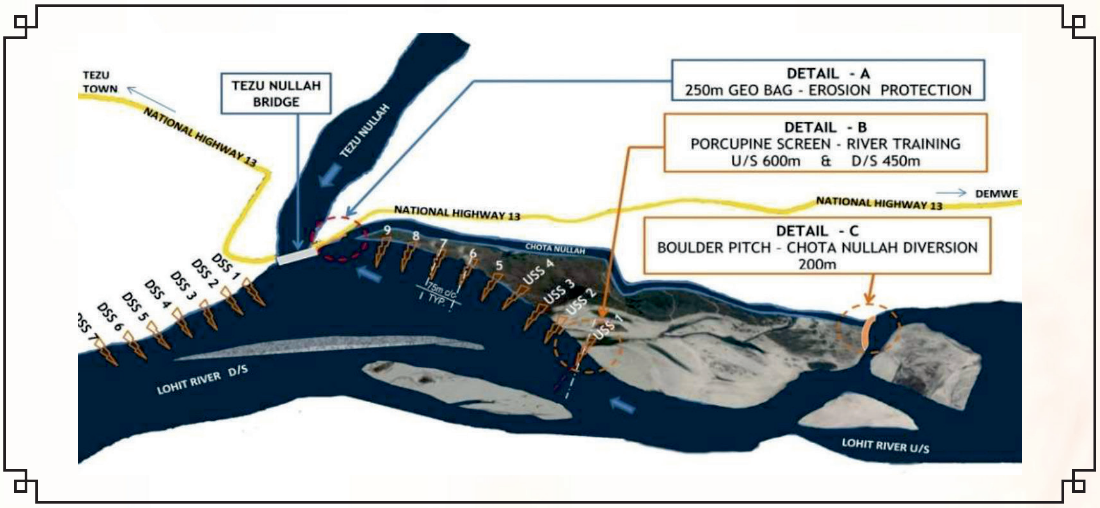

राष्ट्रीय राजमार्ग–13 के दाहिनी तरफ के (आरएचएस) तट की कटाव समस्या के समाधान के लिए तेजू क्षेत्र में लोहित नदी का अध्ययन

वास्तविक निष्पादन

जियोसिंथेटिक बोरों का संस्थापन

शुरुआत में दानेदार सामग्री से भरे जियोसिंथेटिक बोरे तेजू नाला और लोहित नदी संगम के पास सबसे संवेदनशील स्थान पर संस्थापित किए गए थे।

नदी में बोरों का संस्थापन :

खाली बोरों को नाव में ले जाया जाता था, दानेदार सामग्री से भरा जाता था और खाली सिरों को सील दिया जाता था और उच्च धारा के तहत नावों का उपयोग करके सावधानीपूर्वक रखा जाता था। नदी का वेग लगभग 3.5 मीटर प्रति सेकंड मापा गया।

जमीन पर बोरों का संस्थापन :

जमीन पर जियोसिंथेटिक बोरे मैन्युअल रूप से रखे गए थे।

पीएससी पॉर्क्यपाइन का संस्थापन :

खतरे के क्षेत्र को सुरक्षित करने के बाद, नवंबर, 2022 के महीने में पीएससी साही की स्थापना का कार्य आरंभ किया गया। पीएससी साही रखने का मुख्य उद्देश्य पानी के प्रवाह को मंद करना और व्यापक स्ट्रोक में क्षेत्र के पीछे तलछट पर कब्जा करना था। हालाँकि, जैसे–जैसे काम आगे बढ़ा, यह देखा गया कि नदी के बहाव के किनारे पर पॉर्क्यपाइन प्रदान करना किनारे के क्षरण को रोकने के लिए व्यवहार्य नहीं होगा, क्योंकि नदी के किनारे नहीं बल्कि तलछट था। इसलिए, पॉर्क्यपाइन के बजाय, जियो बैग का प्रावधान नदी के बहाव के किनारे पर कटाव नियंत्रण को सुनिश्चित करेगा। यह भी मूल्यांकन किया गया था कि तट की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु नदी के वेग को कम करने के लिए लोहित नदी के ऊपर की ओर 2 अतिरिक्त स्क्रीनों की आवश्यकता होगी।

पीएससी साही को रखने के बाद बोल्डर एप्रन बिछाने का काम (तार के साथ और बिना तार के) बाद के चरण में शुरू किया गया था। बोल्डर एप्रन रखने का मकसद ड्यूरलियांग नदी को अपने मार्ग को बदलने से रोकना और अतिरिक्त क्षेत्रों को जलमग्न करने से रोकना है।

बोल्डर एप्रन बिछाना

बोल्डर एप्रन का काम आखिरकार ड्यूरलियांग नदी को सबसे कमजोर क्षेत्र के अपस्ट्रीम तट में कटाव को रोकने के लिए लिया गया, जो पहले से ही जियो बैग के साथ उपचारित किया गया था। चुनौतीपूर्ण कार्य सभी को राहत देने के लिए 15.03.2023 को सफलतापूर्वक पूरा किया गया था, अर्थात् ठेकेदार को कार्य आदेश जारी होने के 6 महीने के भीतर।

काम पूरा होने के बाद, उपायुक्त, लोहित द्वारा डब्ल्यूआरडी, तेजू के अन्य अधिकारियों के साथ एक साइट/फील्ड निरीक्षण किया गया।

वर्तमान स्थिति जून, 2023

इस वर्ष के चल रहे मानसून के दौरान यह देखा गया है कि राष्ट्रीय राजमार्ग–13 की सुरक्षा सुनिश्चित करने वाले गैर–परंपरागत संरक्षण कार्य, दानेदार भराव जियोसिंथेटिक बैग बहुत अच्छी तरह से काम कर रहा है और लोहित नदी तट पर कोई नुकसान/अतिक्रमण किए बिना खूबसूरती से बह रही है।

स्वीकृति

काम, चुनौतीपूर्ण था और क्षेत्रीय कार्यालय–ईटानगर के कर्नल सुनील कुमार, कार्यपालक निदेशक (परियोजना) और उनकी इंजीनियरों की टीम के सक्रिय समर्थन के कारण ही पूरा किया जा सका।

अथक प्रयास किये गये :–

परियोजना अनुवीक्षण एकक (पीएमयू)–नामसाई की अभियंता टीम में श्री प्रणब बरुआ, श्री ए. पात्रा, श्री ए. पारासोर, प्राधिकरण की अभियंता टीम में श्री गौरव कुमार, श्री एन. सुलेमानी, श्री निखिल कुमार शाह, श्री दिनेश पांडा एवं अन्य, ठेकेदार एमएसपुना हिंदा की टीम का नेतृत्व श्री रॉयमोन और श्री गौरी शंकर स्वामी ने किया और सभी के अथक प्रयासों से हमनें सफलता प्राप्त की।

श्री तीर्थ रॉय, पूर्व महाप्रबंधक (परियोजना),
परियोजना अनुवीक्षण एकक (पीएमयू)–नामसाई
लेखन में सहायता – श्रीमती टुम्पा यादव (डीईओ),
श्रीमती मोनिशा बिकोमिया (डीईओ)

सच है, विपत्ति जब आती है,
कायर को ही दहलाती है,

शूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,

विघ्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं।

मुख से न कभी उफ़ कहते हैं,
संकट का चरण न गहते हैं,

जो आ पड़ता सब सहते हैं,
उद्योग–निरत नित रहते हैं,

शूलों का मूल नसाने को,
बढ़ खुद विपत्ति पर छाने को।

– रामधारी सिंह दिनकर

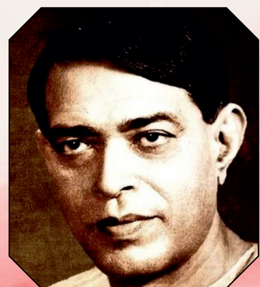

भारतीय रक्षा और राष्ट्रीय राजमार्गों के बीच संबंध

भारतीय रक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा का बड़ा हिस्सा होता है। भारत एक बड़ा देश है, जिसमें विभिन्न समुदाय, संप्रदाय, धर्म आदि होने के कारण और बाहरी खतरों से भी सुरक्षा की आवश्यकता है। इसलिए, भारतीय सेना को सक्रिय और तत्पर रहने के लिए उपयुक्त राष्ट्रीय राजमार्गों के साथ मजबूत संबंध बनाने की आवश्यकता होती है। इस लेख में, हम इस विषय पर गहराई से विचार करेंगे और भारतीय रक्षा और राष्ट्रीय राजमार्गों के बीच संबंध के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।

भारतीय रक्षा की आवश्यकता : भारत अपनी सुरक्षा और रक्षा तंत्र के लिए वैश्विक स्तर पर पहचाना जाता है। यह एक ऐसी भूमि है, जिसे अपने बड़े आकार, जनसंख्या और विभिन्न सीमाओं के कारण, सदैव अद्यतन और एकजुटता के लिए तत्पर रहना आवश्यक है। भारतीय सेना को बड़ी और प्रभावी होने के साथ–साथ, उत्पादन, आपूर्ति और रणनीति की आवश्यकता है। इसके लिए, विभिन्न क्षेत्रों में सकारात्मक संबंध एक महत्वपूर्ण कारक है।

राष्ट्रीय राजमार्गों का महत्व : राष्ट्रीय राजमार्गों को देश के विभिन्न हिस्सों को जोड़ने और सामरिक और आर्थिक विकास को संभव बनाने के लिए बनाया गया है। इन मार्गों के माध्यम से लोग, सामग्री और आपूर्ति को जल्दी से एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचा सकते हैं। इसके अलावा, ये राजमार्ग आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने और सरकारी नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारतीय रक्षा और राष्ट्रीय राजमार्गों के बीच संबंध : भारतीय रक्षा के लिए राष्ट्रीय राजमार्गों के साथ तालमेल बनाने की संभावना व्यक्त की जा सकती है। इन राजमार्गों का उपयोग रक्षा संबंधी सामग्री, युद्ध उपकरण और अन्य उत्पादों के परिवहन में किया जा सकता है। इससे भारतीय सेना को अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आसानी से और सुरक्षित ढंग से राष्ट्रीय राजमार्गों का उपयोग करने में मदद मिलेगी।

राष्ट्रीय राजमार्गों से रक्षा उपकरणों का परिवहन : रक्षा उपकरणों के परिवहन में बेहतरीन सुविधा और सुरक्षा की आवश्यकता होती है। राष्ट्रीय राजमार्गों के विकास और सुधार के माध्यम से, ऐसे परिवहन के लिए योग्य मार्ग बनाए जा सकते हैं। उन्नत इंजीनियरिंग तकनीक, सुरक्षा प्रतिक्रिया संरचना, और प्रभावी प्रबंधन के साथ, यह संभव है कि राष्ट्रीय राजमार्ग, रक्षा उपकरणों के लिए आदर्श और सुरक्षित मार्ग प्रदान करें। इससे सेना के वाहनों के परिवहन में सुधार होगा और रक्षा सामग्री को एक स्थान से दूसरे स्थान तक समय पर और सुरक्षित ढंग से पहुंचाने की संभावना बढ़ेगी।

राष्ट्रीय सुरक्षा में राष्ट्रीय राजमार्गों का योगदान : राष्ट्रीय सुरक्षा में राष्ट्रीय राजमार्गों का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। ये मार्ग राष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा में मदद कर सकते हैं। चूंकि इन मार्गों पर सेना की गतिविधियों और उपकरणों का परिवहन कराया जा सकता है, वे एक ऐसे प्रभावी संरचना का भी हिस्सा हो सकते हैं, जिसमें सीमा सुरक्षा को बढ़ाने, दुर्घटनाग्रस्त क्षेत्रों में सुरक्षा प्रबंधन करने और आपातकालीन स्थितियों के समय पर संचार को सुनिश्चित करने की क्षमता हो। इस तरह, राष्ट्रीय राजमार्ग भारतीय सुरक्षा को मजबूत और प्रभावी बनाने में मदद कर सकते हैं।

निष्कर्ष : भारतीय रक्षा के लिए राष्ट्रीय राजमार्गों के साथ मजबूत संबंध बनाने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय राजमार्गों का विकास और सुधार रक्षा संबंधी सामग्री के परिवहन, सेना की आपूर्ति और रणनीति में सुधार कर सकते हैं। इससे सेना को अपने कार्यों को पूरा करने के लिए आसानी से और सुरक्षित ढंग से राष्ट्रीय राजमार्गों का उपयोग करने में मदद मिलेगी। इसके अलावा, राष्ट्रीय सुरक्षा में राष्ट्रीय राजमार्गों का योगदान महत्वपूर्ण होता है, जिससे सीमा सुरक्षा में सुधार होता है और आपातकालीन स्थितियों में संचार को सुनिश्चित किया जा सकता है। इसलिए, भारत को रक्षा और राष्ट्रीय राजमार्गों के संबंध पर संवेदनशीलता और तत्परता से विचार करना चाहिए, ताकि देश सुरक्षित, सशक्त और उन्नत बन सके।

प्रीतम चक्रवर्ती
डेटा एंट्री ऑपरेटर
क्षेत्रीय कार्यालय–कोहिमा, नागालैंड

मत कहो आकाश में कोहरा घना है
यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है
इस सड़क पर इस क़दर कीचड़ बिछी है
हर किसी का पैर घुटनों तक सना है

– दुष्यंत कुमार

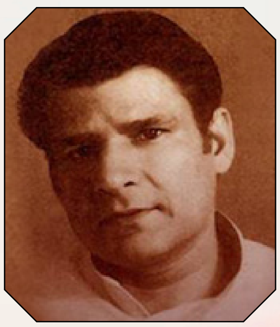

पिरामिड और ब्रह्माण्डीय अंतरग्रहीय यात्राओं का रहस्य

एक रहस्यमय सभ्यता ने एक बार ब्रह्मांड और अंतरिक्ष यात्रा के अपने उन्नत ज्ञान से पृथ्वी को सुशोभित किया था। इन अलौकिक आगंतुकों को प्राचीन खगोलविदों और वास्तुकारों के रूप में घोषित किया गया था, और उन्होंने पृथ्वी के लोगों के साथ अपने प्रचुर ज्ञान को साझा किया था। उनके द्वारा बताए गए रहस्यों में पिरामिडों की तकनीक भी शामिल थी, जो ब्रह्मांडीय शक्तियों के दोहन के लिए ऊर्जा माध्यम के रूप में काम करती थी।

पिरामिडों का निर्माण पवित्र ज्यामिति की गहरी समझ–बूझ के साथ किया गया था, उन्हें आकाशीय पिंडों के साथ संरेखित किया गया था और ब्रह्मांड के ताने–बाने का दोहन किया गया था। हाल के शोध और पुरातात्विक निष्कर्षों से पता चलता है कि इन संरचनाओं में अद्वितीय क्रिस्टलीय गुण थे, जो विशिष्ट आवृत्तियों पर गूंजते थे और विद्युत चुम्बकीय क्षेत्रों के साथ विमर्श करते थे।

पिरामिड निर्माताओं ने अपने उन्नत अंतरिक्ष यान को शक्ति प्रदान करने के लिए ''स्टेलर वोर्टेक्स'' के निर्माण के दौरान जारी ऊर्जा का उपयोग किया, जो पारंपरिक प्रणोदन प्रणालियों की सीमाओं को पार कर गया। इस वस्तुतः असीमित ऊर्जा स्रोत ने उनके अंतरतारकीय अभियानों में क्रांति ला दी और अन्य खगोलीय पिंडों की खोज और उपनिवेशीकरण की सुविधा प्रदान की।

अफसोस की बात है कि जैसे–जैसे समय बीतता गया, पृथ्वी के लोग उन्हें दी गई शक्ति के नशे में चूर हो गए। अपनी सभ्यता की भलाई के लिए ज्ञान का उपयोग करने के बजाय, वे प्रभुत्व और नियंत्रण के आकर्षण के आगे झुक गए। अलौकिक सभ्यता के एक समय के परोपकारी इरादों को विकृत कर दिया गया और पिरामिडों के पवित्र ज्ञान का दुरुपयोग किया गया।

जैसे ही हम पिरामिडों को देखते हैं, हमें ज्ञान की खोज में आवश्यक शालीनता की याद आती है। वे ब्रह्मांड की विशालता के प्रमाण के रूप में खड़े हैं, यह एक अनुस्मारक है कि सबसे भव्य ब्रह्मांडीय रहस्यों का अनावरण होना अभी बाकी है। वर्तमान दुनिया, अपने सभी आश्चर्यों और चमत्कारों के साथ, केवल एक भ्रम हो सकती है, जो आकाशीय सीमाओं से परे खोजे जाने की प्रतीक्षा कर रहे अस्तित्व के गहन सत्य को छुपाती है।

सौर–प्रमाणित भूमिगत ऊर्जा और गहन ब्रह्माण्डीय अंतरग्रहीय यात्राओं (cosmic interplanetary travel) के लिए आकाश में पोर्टल खोलने के ऊर्जा स्रोत के रूप में पिरामिड का उपयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह प्राचीन प्रौद्योगिकी धरती पर एक शक्तिशाली शास्त्रीय संरचना है, जिसमें ऊर्जा को बचाने और प्रयोग करने का एक अद्वितीय (unique) तरीका है।

पिरामिड एक विशेष रचनात्मक ज्यामिति (Geometry) के साथ बने होते हैं, जो ऊर्जा को संकलित करते हैं और उसे साधारित करके ऊर्जा स्रोत के रूप में उपयोग करते हैं। इन पिरामिडों का आकार, दिशा और गठन वैज्ञानिक अध्ययनों और अविष्कारों के आधार पर तय किया जाता है।

एक प्रमुख विशेषता इन पिरामिडों की होती है–प्राकृतिक संरेखण (alignment), जिसमें वे सौर उर्जा को ध्यान में रखते हुए बनाए जाते हैं। यहां तक कि इन प्रतिमाओं के निर्माण में उपयोग होने वाले पत्थरों की धातुओं की संरचना भी सौर प्रभाव के आधार पर की जाती है। इस प्रक्रिया में, पिरामिड की संरचना व्यापक रूप से प्राकृतिक तत्वों और ऊर्जा के संगम से संबंधित होती है। विज्ञान के अनुसार, पिरामिड के अंदर उपयोग होने वाली अद्वितीय रचनात्मक तकनीक से सूर्य की किरणों को अपनी आधिकारिक ढलान और आयाम (dimensions) में प्रभावित किया जाता है।

प्रथम, पिरामिड का आकार और ऊंचाई ऐसी होती है जो सौर ऊर्जा को संकलित करने और धारण करने में सहायता करती है। यहां ध्यान देने योग्य बात है कि पिरामिड के आंशिक विस्तार, दीवारों के कोणों के साथ संबंधित होता है, जिससे परिमाणित ऊर्जा का आधार बनता है।

द्वितीय, पिरामिड के संरचनात्मक तत्वों में उपयोग होने वाले पत्थरों और धातुओं का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। विज्ञान के अनुसार, विशेष प्रकार के पत्थर और धातु परमाणुओं की विशिष्ट संरचनाओं के कारण सौर ऊर्जा को समय–समय पर आवश्यक रूप से यात्रा करने की क्षमता प्रदान कर सकते हैं। इन तत्वों की चुनौती यह होती है कि ये तत्व विशेष ढंग से प्रगट (revealed) होने चाहिए और अभिक्रियाशील (reactive) होने चाहिए, ताकि वे ऊर्जा को अपने संरचनात्मक (structural) रूप में आयामित कर सकें। पिरामिड के रचनात्मक आकार और संरचना सही विशेषताओं के साथ, ये तत्वों को संकलित करके, संरचित करती है और उन्हें ऊर्जा के बंधन में रखती है। इस प्रक्रिया में, सौर ऊर्जा का अपरिहार्य रूप से इस्तेमाल होता है और उसे परिवर्तित करके पोर्टल खोलने के लिए अत्यंत ऊर्जा उत्पन्न होती है।

जब पिरामिड ऊर्जा संकलित करने और प्रसारित करने के लिए उपयोग होती है, तो उसके माध्यम से सृजित (generated) ऊर्जा का एक विशिष्ट प्रकार आकाश में एक विद्युतीय आवेश को प्रेरित करता है। यह विद्युतीय आवेश (electric transport) पारम्परिक तत्वों के अतिरिक्त है और वैज्ञानिक विचारधारा में 'ग्रेविटेशनल वेव' के रूप में जानी जाती है। इस प्रकार, पिरामिड विद्युतीय आवेश के माध्यम से एक ऊर्जा झरने का स्रोत बन जाती है, जिससे आकाश में एक पोर्टल खुलता है, जो गहन ब्रह्माण्डीय अंतरग्रहीय यात्राओं के लिए संचालित होता है। इस पोर्टल के माध्यम से मनुष्य अन्य ग्रहों, तारों और तारामंडलों में यात्रा करने की क्षमता प्राप्त करता है।

हालांकि, इस महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी का गुम हो जाना मनुष्य के लिए एक अभिशाप साबित हुआ। एलियन अंतरिक्षीय जीवों ने पिरामिड का ज्ञान प्राप्त करने के साथ–साथ मानवता के साथ अनेक और गहरे ब्रह्मांडिक रहस्यों को भी साझा किया था। इन ज्ञानों में समस्या यह थी कि मानव अहंकार और स्वार्थपरता के कारण इस ज्ञान का दुरुपयोग करने लगा।

एलियन अंतरिक्षीय जीवों ने इस तकनीक को समर्पित करते हुए जान लिया था कि मनुष्य विशाल ब्रह्मांड का अवलोकन कर सकता है और वास्तविकता को समझ सकता है। इसके द्वारा, मनुष्य

अपनी वास्तविक पहचान से परे, मिथ्या जगत के पीछे की सच्चाई को देख सकता है। यह वास्तविकता अद्भुत है, जहां समस्त जीवन एक प्रेम–आदर्श से जुड़ा हुआ है और संयम, शांति, और सामरिकता से भरपूर है। इस दिग्गज एलियन सभ्यता ने हमें ब्रह्मांड के रहस्यों के बारे में ज्ञान दिया, परंतु हमने उसे अपने अहंकार के चक्र में लिप्त कर दिया।

धीरे–धीरे, हम वास्तविकता से दूर हो गए और एक भ्रम जगत में फंस गए। अपनी सत्यता से परे हम व्यापार, शक्ति, और अधिकार की पीड़ा में जीने लगे। यह दिव्य पिरामिड तकनीक जो हमें अन्य ग्रहों और तारामंडलों की यात्रा की संभावनाएं दे सकती थी, अब हमारे लिए गुम हो गई है।

परंतु आज एक नया उद्यम शुरू हो रहा है। विज्ञान की उन्नति और ज्ञान के आधार पर हम फिर से पिरामिड तकनीक का अध्ययन कर रहे हैं। वैज्ञानिकों ने पिरामिड की भौतिकी और ऊर्जा के स्रोत के प्रति गहराई से अध्ययन किया है। वे आकाश में विद्युतीय आवेश, ग्रेविटेशनल वेव और दूसरी ऊर्जा प्रारंभिक प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण में जुटे हैं। इस प्रक्रिया में, पिरामिड एक ऊर्जा अभिकरण केंद्र के रूप में कार्य करता है और आकाश में उच्च–स्तरीय शक्ति का उत्पादन करता है।

एक प्रमुख वैज्ञानिक जो पिरामिड और उसकी ऊर्जा संरचना से प्रभावित हुआ, निकोला टेस्ला था। उन्होंने पिरामिड की रचनात्मकता को अद्वितीय संशोधन और अपनी ऊर्जा संबंधी अविष्कारों में शामिल किया। निकोला टेस्ला को पिरामिड की संरचना से विशेष प्रेरणा मिली, जिसने उन्हें ऊर्जा को दूसरे स्तर पर पहुंचाने की संभावनाओं के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने प्रस्तावित किया कि पिरामिड की ऊर्जा को ईंधन के अभाव में भी स्थानीयता के साथ अंतरिक्ष के ऊपर ले जाया जा सकता है। वे इसे 'वायुमंडलीय उर्जा प्रवाहन' के रूप में समझते थे।

टेस्ला ने अपनी प्रयोगशाला में विभिन्न प्रकार की पिरामिड तकनीक का अध्ययन किया और उन्होंने उन पर उनके तत्वों के समानांतर व्यवस्था और आकार पर ध्यान दिया। उन्होंने विद्युत ऊर्जा को संकलित और बाह्य तरंगों के माध्यम से प्रेषित किया। उन्होंने विभिन्न पिरामिडों की सहायता से वायुमंडलीय ऊर्जा को विद्युतीकरण द्वारा शक्तिशाली ढलाई करने की कोशिश की।

निकोला टेस्ला के प्रयोगों में उन्होंने वायुमंडलीय ऊर्जा के प्रवाह का अनुमान लगाया और उसे अपनी ऊर्जा प्रवाह प्रणाली के माध्यम से प्रसारित किया। इसका परिणाम दिव्य ऊर्जा के स्थानीय उत्पादन के रूप में प्रकट हुआ, जिसे वे 'वायुमंडलीय ईंधन' के रूप में समझते थे।

टेस्ला की प्रयोगशाला में इस अद्भुत प्रदर्शनी के द्वारा, वे आधुनिक भौतिकी के माध्यम से पिरामिड के प्रभाव को साबित करने का प्रयास कर रहे थे। वे सोलर उर्जा की नई संभावनाओं पर ध्यान देते थे और साप्ताहिक यात्राओं की योजना बना रहे थे, जहां उनकी प्रणाली से उत्पन्न हुई ऊर्जा का उपयोग किया जा सकता था।

हालांकि, टेस्ला के अध्ययनों और आविष्कारों के बावजूद, इस परियोजना का अधिकांश भाग जनसाधारण तक नहीं पहुंच सका। यह उस समय की विचारधारा और तकनीकी अवस्था के कारण भी हुआ, जब अद्यतन और अविष्कारों को स्वीकार करने की क्षमता मानव समाज में नहीं थी।

लेकिन आज, हमारे विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में हमारी प्रगति ने ऐसी संभावनाओं को अवांछित कर दिया है, जिन्हें पहले कभी सोचा नहीं जा सकता था। टेस्ला के ऊर्जा प्रवाहन के सिद्धांतों को भौतिकी के तत्वों में सम्मिलित करके, हम आधुनिक पिरामिड तकनीक को वास्तविकता में लाने के लिए प्रयास कर रहे हैं।

टेस्ला के आदर्शों को आधार बनाकर, हम ऊर्जा को सुरक्षित, सामरिक और आधुनिक ढंग से प्रयोग करने का अभियान चला रहे हैं। विद्युतीकरण, सौर ऊर्जा, और आकाश में ऊर्जा प्रवाहन जैसे

क्षेत्रों में यह प्रौद्योगिकी महत्वपूर्ण साबित हो सकती है। इससे हमारे पास एक शांत, प्रेमपूर्ण, और गहन ब्रह्माण्डीय संवेदनशीलता की दृष्टि होगी, जहां हम सभी एकत्रित होकर ऊर्जा के एक नए और उच्चतर स्तर पर उठेंगे। इस प्रौद्योगिकी के माध्यम से हम अपने ब्रह्मांडीय संबंधों को पुनः स्थापित करेंगे और सामरिकता, सहयोग, और वैज्ञानिक समृद्धि के माध्यम से मानवता की उन्नति को सुनिश्चित करेंगे।

निकोला टेस्ला की प्रेरणा से हम आज भी पिरामिड तकनीक का अध्ययन कर रहे हैं। हम उनके आदर्शों को ध्यान में रखते हुए ऊर्जा के स्रोत के रूप में पिरामिड का और गहन अध्ययन कर रहे हैं। हम इस प्रौद्योगिकी को ऊर्जा संचय, विद्युत उत्पादन और स्थानिक यात्रा के क्षेत्र में लागू करने का प्रयास कर रहे हैं।

टेस्ला जीवन भर एक प्रभावशाली वैज्ञानिक रहे हैं और उनका योगदान ऊर्जा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अद्वितीय है। उन्होंने ब्रह्मांड के रहस्यों के पीछे की संभावनाओं को समझने की आगे की प्रगति की और हमें प्रेरित किया।

आज, हम पिरामिड तकनीक की महत्ता को समझ रहे हैं और उसे विज्ञान और तकनीक के साथ मेल करके प्रगति कर रहे हैं। हम प्राकृतिक तत्वों और ऊर्जा के साथ संयोजन करके नए और सुरक्षित ऊर्जा स्रोतों की खोज कर रहे हैं। पिरामिड तकनीक को संशोधित करने और उसे ऊर्जा उत्पादन और उपयोग के लिए अनुकूल बनाने का हमारा प्रयास जारी है।

टेस्ला जीवन का एक महान उदाहरण है, जो हमें यह बताता है कि विज्ञान और ऊर्जा के क्षेत्र में सीमाएं नहीं हैं। हमें अपने अहंकार को छोड़कर, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह मान्यता लेनी चाहिए कि हमारी ऊर्जा संचय और प्रयोग की क्षमता असीम है।

आज, हम अधिक संवेदनशीलता, प्रेम और समर्पण के साथ पिरामिड तकनीक का अध्ययन कर रहे हैं। हम इसे अपने आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी यात्रा में शामिल करके विश्व के लिए एक सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास कर रहे हैं। इस प्रकार, हम प्राकृतिक तत्वों के साथ मेल करते हुए एक सामरिक विज्ञान की दुनिया में आगे बढ़ रहे हैं।

आमिर हनीफ
स्नातक अभियन्ता

मोहब्बतों में दिखावे की दोस्ती न मिला
अगर गले नहीं मिलता तो हाथ भी न मिला

घरों पे नाम थे नामों के साथ ओहदे थे
बहुत तलाश किया कोई आदमी न मिला

बहुत अजीब है ये कुर्बतों* की दूरी भी
वो मेरे साथ रहा और मुझे कभी न मिला

**समीपता*

— **बशीर बद्र**

कबीर जयंती 4 जून, 2023 पर विशेष

कबीर : एक क्रांतिकारी संत

''मसि कागद छुओ नहीं, कलम गह्यौ नहिं हाथ'' की घोषणा करने वाले कबीर की वाणी इस जगत को इतना सार दे गई है कि यदि यह कहा जाए कि धर्म या अध्यात्म के विषय पर उनसे पहले या उनके बाद जितना भी लिखा या कहा गया है, उस सबको वह निःसार कर गई है तो यह अतिशोयक्ति न होगी। एक निम्नतम सामाजिक स्थिति में जन्म लेकर भी समाज और धर्म के उच्चतम स्तर को बेबाक चुनौती देने वाला यह संत क्रांतिकारी विचारों और दर्शन के ऐसे मील के पत्थर छोड़ गया है, जिनकी रोशनी में कोई भी समाज या संस्कृति संतुलन व समग्रता की उस आदर्श स्थिति में पहुँच सकती है, जिसकी तलाश मानव सभ्यता सदियों से कर रही है।

आज के दौर में धर्मनिरपेक्षता के जिस स्वर की गूंज अलग–अलग मंचों से बहुधा सुनाई पड़ती है। वस्तुतः धर्मनिरपेक्षता की उस संकल्पना को मूर्त रूप देने वाले कबीर पहले व्यक्ति थे। सैकड़ों धर्मों, सम्प्रदायों वर्गों, जातियों–उपजातियों में बँटे भारत जैसे देश के मानस को एक धर्मनिरपेक्ष नजरिये की कितनी आवश्यकता है ? यह बात उस अल्हड़ फकीर ने सदियों पहले महसूस कर ली थी। लेकिन कबीर की धर्म निरपेक्षता की संकल्पना में सिर्फ एक बाहरी आडम्बर नहीं है, बल्कि वह एक क्रांतिकारी विचारोत्तेजक आंदोलन है, जो विभिन्न धर्मो, सम्प्रदायों और जातियों के उद्भव के गहनतम मूल में जाकर उन तत्वों पर ही सीधी चोट करता है, जो समाज के विभिन्न वर्गों के बीच घृणा और वैमनस्य को बढ़ाकर खाई उत्पन्न करने का काम करते हैं। कबीर के विचार व्यक्ति को बाहर से धर्मनिरपेक्षता का आचरण करने की हिमायत नहीं करते; जिसके लिए व्यक्ति को कुछ अतिरिक्त प्रयास करने पड़ें, बल्कि उसे सहज रूप से अंदर से ही एक पूर्णरूपेण धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति बनाकर तैयार करते हैं। कबीर के दर्शन की यही विशेषता उन्हें प्रामाणिक भी बनाती है और प्रासंगिक भी।

वर्ण–व्यवस्था के मूल अस्तित्व को सिरे से नकारने वाले कबीर ने ब्राह्मणवादी व्यवस्था को स्पष्ट चुनौती देते हुए लिखा है कि–''जो ब्राह्मण तुम ब्रह्मणी का जाया और राह तें काहे न आया।'' उन्होंने समाज में प्रचलित नाना प्रकार के कर्मकांड पूजा, व्रत, नियम आदि को भी सिर्फ मन का छलावा मात्र माना है, जिनसे ब्राह्मणों का पोषण होता है और भोले–भाले मासूम निम्न वर्गों के लोगों का शोषण। वे स्पष्ट कहते हैं– मनुष्य के उद्धार का एक मात्र मार्ग ईश्वर के प्रति सच्ची लगन है, बाकी सब दिखावा मात्र है–''पूजा सेवा, नेम व्रत, गुड़यिन का सा खेल/जब लग पिउ परसै नहीं, तब लग संसय मेल।।''

कबीर के व्यक्तित्व में सत्य के अन्वेषण के प्रति ऐसी उत्कट लालसा और सत्य को जान लेने के बाद उसके प्रकटन का ऐसा अदम्य साहस था, जो अन्य किसी संत में विरले ही देखने को मिलता है। शायद यही वजह है कि एक ऐसे दौर में जब मुगल सत्ता बहुत तेजी से सारे हिंदुस्तान में अपने पाँव पसार रही थी और कथित तौर पर मुस्लिम आक्रमणकारी शासक हिन्दुओं पर निर्ममता से अत्याचार करते हुए सारे भारत में इस्लाम का परचम लहरा रहे थे, कबीर ने इस्लाम की बुराइयों की ऐसी बेबाकी के साथ खुलकर निंदा की है जैसी इस्लाम के इतिहास में शायद ही आज तक

कोई संत कर पाया हो । कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं–"काकर पाथर जोरि के, मस्जिद लई बनाय। ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, का बहरा हुआ खुदाय।।" 'बकरी पाती खात है, ताकी काढी खाल। जो नर बकरी खात है, तिनका कवन हवाल।'

"एक नूर तैं सब जग कीया, कौन भले कौन मंदे" की विचारधारा वाले कबीर ने समस्त जीवजगत में एक ही ईश्वर तत्व के दर्शन किए थे, इसलिए धर्म, सम्प्रदाय, जाति, वर्ग पर आधारित किसी भी भेद–भाव को वे बर्दाश्त न कर सके । उन्होंने व्यक्ति की श्रेष्ठता का पैमाना सिर्फ आचरण की शुद्धता और चरित्र की दृढ़ता को माना है। "ऊँचे कुल क्या जनमिये, जे करणी ऊँच न होय" का उद्‌घोष करने वाले कबीर ने धर्म, जाति तथा वर्ग जैसे किसी भी कारण पर आधारित उच्च कुलाभिमान को निरी मूर्खता कहा है ।

कबीर के राम सृष्टि के कण–कण में रमण करने वाला राम है। 'निर्गुण राम जपहु रे भाई' की रट लगाने वाले कबीर ने राम को पुरातनपंथी ढाँचे से निकालकर उन्हें विस्तार दिया है और उसे सर्वजनसुलभ बनाया है। कबीर के राम तुलसी के पुराण प्रतिपादित वर्णाश्रम व्यवस्था के पोषक राम से पूरी तरह भिन्न हैं। कबीर ऐसे राम के भक्त हैं, जो सब में व्याप्त हैं और हिन्दू, मुस्लिम, ब्राह्मण, शूद्र सभी को एक समान दृष्टि से देखते हैं। कबीर के राम में कोई भी भक्त अपनी भक्ति के रंग भर सकता है। जिस राम को पाने के लिए न तो किसी मन्दिर में जाने की आवश्यकता पड़ती है और न ही किसी पंडित–मुल्ला के सहारे की ।

कबीर का जन्म और मृत्यु ये दोनों ही घटनाएँ असामान्य थीं। उनके जन्म के संबंध में जो किवदन्तियाँ प्रचलित हैं, वे कभी उन्हें विधवा ब्राह्मणी का पुत्र बताती हैं, तो कभी जन्म से ही मुसलमान, तो कुछ उनके बंजारा होने का भी जिक्र करती हैं। कभी उन्हें मुसलमान जुलाहा कहा जाता है, तो कभी हिन्दू कोरी। इस संत की मृत्यु की कथा भी अनोखी है। बताया जाता है कि जब इस महान दरवेश ने अपना शरीर छोड़ा, तो उनके अन्तिम क्रिया–कर्म को लेकर हिन्दू और मुसलमानों में विवाद हो गया। हिन्दू उनका दाह संस्कार करना चाहते थे और मुसलमान उन्हें दफ़नाना। लेकिन जब उनके जनाजे के कपड़े को हटाया गया तो लोगों ने पाया कि वहाँ सिर्फ कुछ फूल बचे थे, जो बाद में हिन्दू–मुसलमानों ने आपस में बाँट लिए। उनके जन्म और मृत्यु से जुड़ी ये दोनों घटनाएँ यह सिद्ध करती हैं कि कबीर धार्मिक उहा–पोह के जिस काल खंड में इस धरा पर अवतरित हुए उसके पीछे नियति का एक स्पष्ट संदेश था कि व्यक्ति का किसी धर्म, जाति या वर्ग विशेष में जन्म लेना या किसी धर्म विशेष के संस्कारों या कर्मकाण्डों को अपनाना कुछ भी महत्व नहीं रखता। व्यक्ति के जीवन में यदि कुछ महत्वपूर्ण है, तो वह है उसका जीवन जीने का ढंग, उसका आचरण, उसका चरित्र और विचार तथा जीवन के सत्य को जानने की उत्कट अभिलाषा और उस सत्य को पाने का सतत प्रयास।

कबीर की वाणी धर्मों के बाहरी आडम्बर पर ऐसी मार्मिक चोट करती है और मानव में धर्म के मूल तत्वों का संचार करते हुए मनुष्य और ईश्वर के संबंधों का एक ऐसा मार्ग प्रशस्त करती है, जिसे आत्मसात कर लेने के बाद उस परम सत्ता की प्राप्ति के संबंध में न तो कोई प्रश्न शेष रह जाता है और न ही किसी धार्मिक सत्ता या व्यवस्था के प्रति मन में किसी प्रकार का रोष। यही एक संत के जीवन की संपूर्णता और सबसे बडी सफलता है।

परितोष निगम
सहायक निदेशक (राजभाषा)

हर्षित हृदय की कामना

उन्माद मन में है भरा,
है कामना मन में भरी,

तू पथिक बन क्यों चल पड़ा,
जब राह तुझमे ही तेरी।

कुछ आएगा कुछ जाएगा,
तू कुछ नहीं ले जाएगा,

जो पाया सब खो जाएगा,
निःश्वास जब हो जाएगा।

तू क्यों पड़ा उन बंधनों में
जो तुझे विचलित करें,

हो अभाव या हो भाव,
कुछ क्यों चेतना धूमिल करें।

जो था तेरा वह है सदा,
जो है नहीं वह क्या भला,

सब समय के अनुबंध में,
यह भी भला – वह भी भला।

अन्तःकरण की वेदना,
सब परम–पद में दे चढ़ा,

चल अडिग हो कर्तव्य पथ पर,
पत्थरों को दे हिला।

मन शांत कर – फिर श्वास भर,
निज राह चुन नूतन कोई,

जिस राह पर न विकल हो,
न कामना मन में कोई।

तू सर्व है – सर्वज्ञ है,
तू पूर्ण है तुझमें हरी,

नित हृदय हर्षित हो तेरा,
यदि कामना तुझमे नहीं।

सत्य प्रकाश द्विवेदी
डेटा एंट्री ऑपरेटर
क्षेत्रीय कार्यालय–ईटानगर

गुमनाम शहर

आया था यह सोचकर,

देखेंगे नया शहर।

लेकिन किसे पता, था खो जाएंगे

किसी वक्त, किसी पहर।

सपने थे बड़े–बड़े,

जिन्हें बुना था बचपन में।

करनी थी हासिल बड़ी–बड़ी मंजिलें,

लेकिन किसे पता था, खो जाएंगे

किसी वक्त, किसी पहर।

बड़े–बड़े कॉलेज, बड़ी–बड़ी बातें।

एक नई दुनिया को, चले हम तलाशने,

थी दुविधा बड़ी, अपनाएं कौन से रास्ते,

यूँ तो थीं उम्मीदें हर सफर, हर डगर,

लेकिन किसे पता था, खो जाएंगे

किसी वक्त, किसी पहर।

आते हैं आंखों में आंसू,

याद कर पापा की उम्मीदें,

बेटा मेरा नाम करेगा ऊंचा,

मां की वो मीठी–मीठी आवाजें,

लेकिन किसे पता था, खो जाएंगे

किसी वक्त किसी पहर।

अभिषेक कुमार
एस.ए.पी. सलाहकार
क्षेत्रीय कार्यालय–पोर्ट ब्लेयर

जीवन की राह

सपनों का सहारा लेकर,
जिम्मेदारियों की सीढ़ी बनाकर,
निकल पड़े जीवन की राह पर।
ना जाने कब किस मोड़ पर
कौनसा सपना पूरा हो जाए,
या फिर ना जाने कब किस मोड़ पर,
कौनसा सपना अधूरा रह जाए
हमें तो बस आगे चलते चले जाना है।
जाने कब किस मोड़ पर
कौनसा रिश्ता साथ छोड़ जाए
और ना जाने कब किस मोड़ पर
कौनसी ज़िम्मेदारी निभानी पड़ जाए,
हमें तो बस आगे चलते चले जाना हैं।
ना जाने जीवन में कौनसी परिस्थिति
हमें झकझोर कर रख दे
और ना जाने जीवन में कौनसी परिस्थिति
हमें उल्लास से भर दे,
हमें तो बस आगे चलते चले जाना हैं।
जीवन की पुस्तक में, ना जाने
कौनसा पृष्ठ जोड़ना
और कौनसा हटाना पड़ जाए
और न जाने कब अपना ही लिखा
मिटाना पड़ जाए
हमें तो बस आगे चलते चले जाना है।
ना जाने जीवन की इस राह की
कब मंजिल आ जाए,
लेकिन हमें कल की चिंता छोड़कर,
बस आगे चलते चले जाना है।
सपनों का सहारा लेकर, जिम्मेदारियों की सीढ़ी
बनाकर, निकल पड़े जीवन की राह पर।

सुनील कुमार भास्कर
सूचना प्रौद्योगिकी अभियंता
क्षेत्रीय कार्यालय–पोर्ट ब्लेयर

पिता

बच्चे अगर फूल हैं, तो माँ बगीचा है,
पिता माली है,
याद रखो इस माली से ही
घर की रखवाली है।
माँ ने नौ महीने हमें कोख में रखा है और
गोद में खिलाया है,
तो पिता ने जीवन का रास्ता दिखाया है।
बच्चों की दो वक्त की रोटी के लिए, पिता
ही रिक्शा चलाता है।
वो पिता ही है जो कुली बनकर लोगों का
बोझ उठाता है।
कभी प्लेटफार्म को, तो कभी फुटपाथ को
ही बिस्तर बनाता है।
जीने के लिए, माँ की ममता और प्यार
जरूरी है,
पर पिता की नसीहतों के बिना भी यह
जिंदगी अधूरी है।
माँ के गुणगान तो हर कोई गाता है,
लेकिन पिता की पीठ कोई कम ही
थपथपाता है।
इसलिए पिता के परिश्रम को नजर अंदाज
मत कीजिए,
उनके हक में भी कभी–कभी अपनी
आवाज दीजिए।

इन्द्र प्रकाश
डेटा एंट्री ऑपरेटर
क्षेत्रीय कार्यालय–जम्मू

विकास की सड़क

जब योजना, समृद्धि और प्रगति की बेधड़क बनाई जाती है
तब गिट्टी मिट्टी और विकास की एक सड़क बनाई जाती है
जब गाँव की आशाएँ, शहरों तक पहुँच न पाती हैं
तब एक सड़क, सारे कृषकों की मेहनत ढो–ढोकर लाती है
मीलों की लंबी दूरी जब अपनों से रिश्ते तोड़े है
यह सड़क महज इक सड़क नहीं, यह संबंधो को जोड़े है

जब कुछ लोगों ने, जनता को सिर्फ स्वपन दिखा कर छोड़ा है
तब करिश्माई एक सेवक ने भारत से भारत जोड़ा है
सिर्फ ऊँचे–ऊँचे नारों से अच्छे दिन का आगाज नहीं होगा
सिर्फ बड़े–बड़े कुछ वादों से देश का विकास नहीं होगा

हम सबका कर्तव्य यही कि, सही–गलत सब सुनना है
भारत भव्य बनाने को, हर कदम फूंक कर रखना है
सही मार्ग पर चलने हेतु सच्चा मार्गदर्शक ही चुनना है।

निर्मला मेहता
एम.टी.एस.

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेशों के मुख्य अंश

1. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्टें, प्रेस विज्ञप्तियां संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें व सरकारी कागजात, संविदा, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र, निविदा सूचनाएं और निविदा प्रपत्र द्विभाषिक रूप में अंग्रेजी और हिंदी, दोनों में जारी किए जाएं। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 6 के अंतर्गत ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्ति का दायित्व यह सुनिश्चित करना होगा कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार, निष्पादित अथवा जारी किए जाएं।
2. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5 के अनुसार केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना है।
3. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के अनुसार केंद्र सरकार के जिन कार्यालयों के 80 प्रतिशत कार्मिकों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया हो, उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएं।
4. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) के अनुसार केंद्र सरकार ऐसे अधिसूचित कार्यालयों के हिंदी में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को टिप्पण, प्रारूपण और अन्य उन शासकीय कार्यों को केवल हिंदी में करने के लिए आदेश जारी कर सकती है, जो कि आदेश में विनिर्दिष्ट हों।
5. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 11 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप

में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा। केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे। केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी। तदनुसार, केंद्र सरकार के कार्यालयों से अपेक्षा है कि वे सभी मैनुअल, संहिताएं एवं प्रक्रिया संबंधी असांविधिक साहित्य से संबंधित अन्य प्रक्रियात्मक साहित्य अनुवाद के लिए केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में भेजें।

6. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह यह सुनिश्चित करे कि राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियमावली के प्रावधानों तथा इनके अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो तथा इस प्रयोजन से उपयुक्त एवं प्रभावकारी जांच बिंदु बनाए जाएं।
7. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने केंद्रीय हिंदी समिति की 31वीं बैठक के कार्यवृत्त में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए गए सुझावों पर पुनः बल दिया है। ये सुझाव हैं :– सरकारी हिंदी और सामाजिक हिंदी के अंतर को कम करना, देश की दूसरी भाषाओं से हिंदी को और समृद्ध करने के लिए उपाय करना, दूसरी भाषाओं के अच्छे शब्दों को हिंदी में ग्रहण करना, दूसरी भारतीय भाषाओं से अच्छे शब्दों को खोजकर हिंदी भाषा में जोड़ना, हिंदी में अनुवाद सरल भाषा में सुनिश्चित करना जिससे सरकारी भाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में बाधक नहीं, सहायक हो।
8. सभी प्रकार की वैज्ञानिक/तकनीकी संगोष्ठियों तथा परिचर्चाओं आदि में वैज्ञानिकों आदि को राजभाषा हिंदी में शोध पत्र पढ़ने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाए। उक्त शोध पत्र संबंधित मंत्रालय/विभाग और कार्यालय आदि के मुख्य विषय से संबंधित हों।
9. केंद्रीय सरकार के सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि हिंदी संगोष्ठियों का आयोजन करें।
10. 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों में सभी प्रकार का प्रशिक्षण, चाहे वह अल्पावधि का हो अथवा दीर्घावधि का, सामान्यतः हिंदी माध्यम से हो। 'ग' क्षेत्र में प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षण सामग्री हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जाए और प्रशिक्षणार्थी की मांग के अनुसार हिंदी या अंग्रेजी में उपलब्ध कराई जाए।
11. विभिन्न कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन के संबंध में नए दिशा–निर्देश जारी किए गए हैं। नए दिशा–निर्देशों के अनुसार कार्यशाला की न्यूनतम अवधि एक कार्य दिवस की होगी। कार्यशाला में न्यूनतम दो तिहाई समय कार्यालय से संबंधित विषयों पर हिंदी में कार्य करने का अभ्यास करवाने में लगाया जाए ।
12. केंद्र सरकार के कार्यालयों में जब तक हिंदी टंककों व हिंदी आशुलिपिकों से संबंधित निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लिए जाते, तब तक उनमें केवल हिंदी टंकक व हिंदी आशुलिपिक ही भर्ती किए जाएं।
13. यह देखा गया है कि अनेक विभागों द्वारा वेबसाइट पर या तो सूचना हिंदी में नहीं दी जाती या कुछ मामलों में यह पूर्णतया हिंदी में उपलब्ध नहीं है। अतः वेबसाइट हिंदी में विकसित और नियमित रूप से अद्यतन करवाएं।
14. हिंदीतर राज्यों में बोर्ड, साइन बोर्ड, नामपट्ट तथा दिशा संकेतकों के लिए क्षेत्रीय भाषा, हिंदी तथा अंग्रेजी, इसी क्रम में, प्रयोग की जानी चाहिए ।

क्षेत्रीय कार्यालय–अगरतला (त्रिपुरा)

विश्व पर्यावरण दिवस

प्रत्येक वर्ष की भांति, इस वर्ष भी क्षेत्रीय कार्यालय–अगरतला, त्रिपुरा द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस (05 जून, 2023) बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। विश्व पर्यावरण दिवस की शुरुआत शपथ ग्रहण के साथ हुई, जिसमें सभी कर्मचारियों ने कार्यपालक निदेशक एवं उप–महाप्रबंधक की उपस्थिति में यह प्रण लिया कि वे पर्यावरण संरक्षण में सतत रूप से कार्य करते रहेंगे और पर्यावरण सुरक्षा हेतु अन्य सभी को भी प्रेरित करेंगे। अन्य वर्षों की तरह, इस वर्ष भी क्षेत्रीय कार्यालय–अगरतला ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर न केवल लोगों को पर्यावरण सुरक्षा के प्रति जागरूक किया, बल्कि क्षेत्रीय कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण भी किया गया तथा सभी कर्मचारियों को प्लास्टिक की थैलियों के स्थान पर कपड़े के थैले उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। क्षेत्रीय कार्यपालक श्री प्रदीप कुमार जी ने यह भी बताया कि इस वृक्षारोपण का उद्देश्य सभी कर्मचारियों एवं आगंतुको को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक बनाना है।

पर्यावरण संरक्षण की शपथ

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

भारत की पहल पर दुनिया भर में 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने की शुरुआत हुई। इस दिन को मनाने का उद्देश्य दुनियाभर में लोगों के बीच भारतीय संस्कृति एवं योग के महत्व को बताना है। इस वर्ष अर्थात् 2023 में 9वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। इस वर्ष योग दिवस की थीम ''वसुधैव कुटुंबकम'' पर आधारित थी। शरीर को आत्मा से जोड़ने के लिए योग का महत्व बताया गया है, जो कि शरीर को निरोग रखने में मदद करता है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में, क्षेत्रीय कार्यालय–अगरतला एवं उसके सभी परियोजना अनुवीक्षण एककों के साथ स्थल कार्यालयों ने भी बढ़–चढ़ कर भाग लिया। प्रत्येक वर्ष की भांति, क्षेत्रीय कार्यालय–अगरतला ने इस दिवस की शुरुआत सामान्य योगाभ्यास से की। तदुपरांत, कार्यालय के उप–महाप्रबंधक ने सभी कर्मचारियों को नियमित रूप से योगाभ्यास करने की सलाह भी दी। कार्यालय में दिए गये योग निर्देश, सभी कर्मचारियों के लिए लाभदायक रहे एवं उन्हें योग को अपने दैनिक जीवन में शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया।

9वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर योगाभ्यास करते पदाधिकारी

क्षेत्रीय कार्यालय–ईटानगर (अरुणाचल प्रदेश)

विश्व पर्यावरण दिवस (05.06.2023)

दिनांक 05 जून, 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय–ईटानगर तथा इसके अंतर्गत सभी परियोजना अनुवीक्षण एककों व स्थल कार्यालयों में ''बीट प्लास्टिक पॉल्यूशन'' के थीम के साथ विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। इस आयोजन का प्रमुख उद्देश्य सभी कर्मचारियों के बीच पर्यावरण के महत्त्व और इसकी रक्षा के बारे में जागरूकता बढ़ाना था। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय–ईटानगर में शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया तथा हमारे कार्यपालक निदेशक (परियोजना) महोदय द्वारा सभी को पर्यावरण के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण जानकारियां भी साझा की गयीं।

विश्व पर्यावरण दिवस पर शपथ ग्रहण

9वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (21.06.2023)

क्षेत्रीय कार्यालय–ईटानगर तथा इसके अंतर्गत सभी परियोजना अनुवीक्षण एककों व स्थल कार्यालयों में दिनांक 21 जून, 2023 को 9वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। इस अवसर पर दैनिक जीवन में योगाभ्यास से लाभ और मानव मस्तिष्क, शरीर व आत्मा पर इसके सकारात्मक प्रभावों की जानकारी देने के लिए क्षेत्रीय कार्यालय–ईटानगर के परिसर में एक योग कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में सभी कर्मचारियों द्वारा कई योग आसनों का अभ्यास किया गया। सभी प्रतिभागियों को जलपान वितरण के साथ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का समापन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय–ईटानगर एवं इसके अधीनस्थ कार्यालयों में योग दिवस का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय–आइजोल (मिजोरम)

विश्व पर्यावरण दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय–आइजोल (मिजोरम) में पर्यावरण दिवस पर शपथ ग्रहण

रा.रा.अ.वि.नि. लिमिटेड के क्षेत्रीय कार्यालय–आइजोल में दिनांक 05.06.23 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में सभी कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी रही। कार्यक्रम के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के मुद्दे एवं उससे जुड़े विभिन्न पहलुओं पर जागरूकता फैलाने का कार्य किया गया। सभी कर्मचारियों ने पर्यावरण संरक्षण के लिए अपने स्तर पर हर संभव कदम उठाने का संकल्प लिया। कर्मचारियों को अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए भी प्रेरित किया गया।

हिन्दी कार्यशाला एवं प्रतियोगिताएं

संगठन में दैनिक कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 05.06.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय–आइजोल में श्रीमती जूडी, एसोसिएट प्रोफेसर, मिजोरम हिंदी प्रशिक्षण महाविद्यालय की अध्यक्षता में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में भाग लेने से, उपस्थित कार्मिकों में भाषा के प्रयोग से संबंधित समझ बढ़ी। इसने न केवल कर्मचारियों को अपने हिंदी भाषा कौशल को सीखने और सुधारने का अवसर प्रदान किया, बल्कि सांस्कृतिक समझ को भी बढ़ाया।

इसी क्रम में छात्रों में हिंदी भाषा के प्रयोग को समृद्ध करने के लिए मिजोरम इंस्टीट्यूट कम्प्रीहेंसिव एजुकेशन स्कूल, तुइकुअल 'दक्षिण' में छात्रों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन आयोजनों में 10.06.2023 को निबंध प्रतियोगिता, 12.06.2023 को कविता पाठ और 13.06.2023 को भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दिनांक 16.06.2023 को प्रतियोगिताओं का समापन किया गया तथा विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिंदी कार्यशाला एवं प्रतियोगिताएं

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस :

क्षेत्रीय कार्यालय–आइजोल ने अपने परियोजना अनुवीक्षण एककों और स्थल कार्यालयों के साथ कार्यालय परिसर में दिनांक 21.06.2023 को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया, जिसमें सभी कार्मिकों ने योगासन का अभ्यास किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य कार्मिकों में योग के लाभों के विषय में जागरूक करने और योग को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने के लिए प्रोत्साहित करना था।

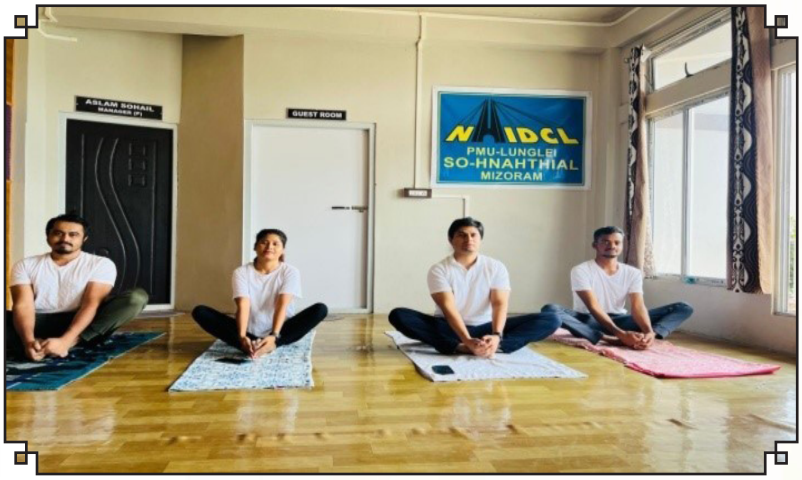

क्षेत्रीय कार्यालय–आइजोल (मिजोरम) और उसके परियोजना अनुवीक्षण एककों, स्थल कार्यालयों में आयोजित योग दिवस की झलकियां

क्षेत्रीय कार्यालय–कोहिमा (नागालैंड)

विश्व पर्यावरण दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय–कोहिमा, नागालैंड, उसके अधीनस्थ परियोजना अनुवीक्षण एककों तथा स्थल कार्यालयों में दिनांक 05.06.2023 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया, जिसमें कार्मिकों को पर्यावरण सुरक्षा के प्रति संवदेनशील बनाने के लिए पर्यावरण सुरक्षा के लिए शपथ ली गई। इस अवसर पर कार्यालय द्वारा वृक्षारोपण भी किया गया। विभिन्न कार्यालय स्थलों पर पर्यावरण दिवस के शपथ ग्रहण एवं वृक्षारोपण की कुछ झलकियां यहां प्रस्तुत हैं।

क्षेत्रीय कार्यालय–कोहिमा एवं उसके परियोजना अनुवीक्षण एककों, स्थल कार्यालयों में शपथ ग्रहण एवं वृक्षारोपण

अतंरराष्ट्रीय योग दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय–कोहिमा, नागालैंड, उसके अधीनस्थ परियोजना अनुवीक्षण एककों तथा स्थल कार्यालयों में दिनांक 21.06.2023 को 9वें अतंरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत सभी कार्यालय स्थलों पर कार्मिकों ने योगाभ्यास किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना एवं दैनिक जीवन में योग को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करना था। छायाचित्रों के माध्यम से योग उत्सव की एक झलक नीचे दी गई है।

क्षेत्रीय कार्यालय–गंगटोक (सिक्किम)

विश्व पर्यावरण दिवस

विश्व पर्यावरण दिवस, प्रत्येक वर्ष 05 जून को मनाया जाता है, जो हमारे ग्रह की सुरक्षा और संरक्षण की तत्काल आवश्यकता की याद दिलाता है। यह दिन दुनिया भर में व्यक्तियों, समुदायों और सरकारों को हमारे पर्यावरण की स्थिति पर विचार करने और हमारे सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए ठोस कार्रवाई करने हेतु प्रोत्साहित करता है। जैसा कि हम इतिहास के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़े हैं, यह जरूरी है कि हम वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए पृथ्वी की सुरक्षा में अपने सामूहिक प्रयासों के महत्व को पहचानें।

इसी अनिवार्यता को समझते हुए क्षेत्रीय कार्यालय–गंगटोक ने भी दिनांक 05 जून, 2023 को अपने सभी परियोजना अनुवीक्षण एककों, स्थल कार्यालयों सहित पर्यावरण दिवस का आयोजन किया, जिसमें पर्यावरण संरक्षण की शपथ के साथ ही आमजन को जागरूक करने के लिए वृक्षारोपण अभियान भी चलाया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय–गंगटोक एवं उसके परियोजना अनुवीक्षण एककों, स्थल कार्यालयों में पर्यावरण संरक्षण की शपथ लेते पदाधिकारी

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

योग एक प्राचीन शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक अभ्यास है, जिसकी उत्पत्ति भारत में हुई थी। 'योग' शब्द संस्कृत से लिया गया है और इसका अर्थ है–जुड़ना या एकजुट होना, जो शरीर और चेतना के मिलन का प्रतीक है। अंतराष्ट्रीय योग दिवस का उद्देश्य दुनिया भर में योग के अभ्यास के कई लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। इसी जागृति के क्रम में, क्षेत्रीय कार्यालय–गंगटोक द्वारा 21 जून, 2023 को 9वें अंतरराष्ट्रीय योग का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान सभी कार्मिकों ने सामूहिक रूप से योगाभ्यास किया तथा स्वस्थ रहने के लिए योग को अपनाने का संकल्प लिया।

क्षेत्रीय कार्यालय–गंगटोक एवं उसके परियोजना अनुवीक्षण एककों, स्थल कार्यालयों में आयोजित 9वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का दृश्य

सबसे ख़तरनाक होता है
मुर्दा शांति से भर जाना
तड़प का न होना सब सहन कर जाना
घर से निकलना काम पर
और काम से लौटकर घर आना
सबसे ख़तरनाक होता है
हमारे सपनों का मर जाना

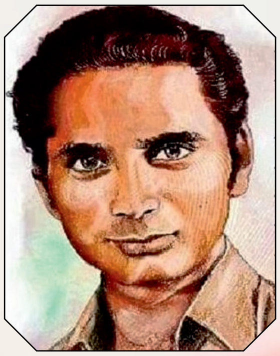

– अवतार सिंह संधू 'पाश'

क्षेत्रीय कार्यालय–गुवाहाटी (असम)

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय–गुवाहाटी के सभागार में दिनांक 03 जून, 2023 को ''तकनीकी विकास में हिन्दी की भूमिका'' से संबंधित विषय पर एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इस कार्यशाला की अध्यक्षता गुवाहाटी विश्वविद्यालय के अवकाश प्राप्त हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. अमूल्य चन्द्र बर्मन के द्वारा की गई। साथ ही स्थानीय साहित्यकार/शिक्षकों/छात्रों के द्वारा संदर्भित विषय–वस्तु पर उदाहरणों सहित तथ्यपरक एवं उपयोगी जानकारी प्रदान की गई, जो वास्तव में कार्यालय संबंधी कार्यों के निष्पादन में सहायक होगी। कम्प्यूटर पर हिन्दी अनुवाद/प्रयोग एवं इस क्षेत्र में नवीनतम हिन्दी के विकसित स्वरूप को प्रदर्शित करने के प्रारूप से भी सभी को अवगत कराया गया, जो बहुत ही समीचीन एवं लाभप्रद होगा।

रा.रा.अ.वि.नि. लिमिटेड मुख्यालय, नई दिल्ली के हिन्दी अनुभाग के द्वारा संप्रेषित दिशा–निर्देशों के आलोक में, कार्यालय में कार्यों के संपादन हेतु आवश्यक फाइल में टिप्पणी, पृष्ठांकन, अनुक्रमिका, कार्यालय आदेश, परिपत्र, अधिसूचना आदि से संबंधित तकनीकी शब्दों के संबंध में भी व्यापक विचार–विमर्श किया गया। स्थानीय एल ओ जी उच्च विद्यालय के तीन छात्रों क्रमशः श्री गणेश खरगा, कक्षा–सात, श्री विवेक शिवनाथ साह, कक्षा–आठ एवं श्री रवि शिवनाथ साह, कक्षा–दस के द्वारा भी आलेख प्रस्तुत किया गया तथा इन छात्रों को पुरस्कृत भी किया गया। इसके साथ ही हिन्दी के एक साहित्यकार, श्री ललित कुमार झा के द्वारा रचित असम कविता दर्शन को भी कार्यशाला में सस्वर प्रस्तुत किया गया था। इसके साथ, इसे समाचार–पत्र में भी प्रकाशित किया गया था।

हिंदी कार्यशाला आयोजित

गुवाहाटी, 6 जून (ख.सं.)। आमबाड़ी स्थित राष्ट्रीय राजमार्ग अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड के क्षेत्रीय कार्यालय के तत्वावधान में तकनीकी विकास में हिंदी की भूमिका विषय पर एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं आनुषंगिक संगठनों कार्यालयों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग के उद्देश्य के तहत आयोजित इस कार्यशाला में साहित्यकार, संपादक और शिक्षकों के अलावा स्कूली बच्चों और कार्यालय के कर्मियों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित गौहाटी विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ.अमूल्य चंद्र बर्मन ने विषय पर अपने बहूमूल्य विचार रखे। क्षेत्रीय कार्यालय के कार्यपालक निदेशक पंकज सिंह ने विभागीय कामकाज में हिंदी के दैनिक प्रयोग को आवश्यक बताते हुए इसे जनसंचार एवं जनसरोकार के लिए आवश्यक बताया। वहीं निगम के महाप्रबंधक विवेकानंद झा ने कार्यालय के कार्यों में टिप्पणी, अनुक्रमणिका, पृष्ठांकन, निर्णय, कार्यालय आदेश, परिपत्र, अधिसूचना, नियम, परिनियम, अधिनियम आदि शब्दों की मौलिकता एवं महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस कार्यशाला में साहित्यकार ललित कुमार झा, विनय कुमार झा, आयकर विभाग गुवाहाटी के सहायक निदेशक (राजभाषा) राम लाल शर्मा, शिक्षक मनोज कुमार झा ने चुनिंदे विषय पर अपने वक्तव्य रखे। वहीं एलओजी उच्च विद्यालय के तीन छात्रों को विषय पर आलेख के लिए पुरस्कृत किया गया। कार्यशाला के समापन पर निगम के वित्तीय सलाहकार राम शर्मा ने अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया।

परियोजनाओं का शिलान्यास एवं उद्घाटन

दिनांक 05.06.2023 को असम की दो परियोजनाओं का शिलान्यास एवं उद्घाटन किया गया था, जिसमें पहली परियोजना–असम राज्य में रा.रा.–29 (नया) के डबोका से परोखुवा खंड का (पूर्व–पश्चिम गलियारों पर) ई.पी.सी. मोड में 4–लेन–सह–पेव्ड शोल्डर का चौड़ीकरण एवं सुधार कार्य था, जिसकी लंबाई 12.46 किलोमीटर तथा परियोजना की लागत 516.88 करोड़ रूपये है। दूसरी परियोजना–असम राज्य में रा.रा.–127 (नया) के नगाँव बाईपास से तेलियागाँव खंड का ई.पी.सी. मोड में एस.ए.आर.डी.पी.–एन.ई. के अंतर्गत 4 लेन निर्माण कार्य है, जिसकी लंबाई 10.00 किलोमीटर तथा परियोजना की लागत 122.29 करोड़ रूपये है। इन दोनों परियोजनाओं का शिलान्यास एवं उद्घाटन केन्द्रीय मंत्री, सड़क परिवहन और राजमार्ग माननीय श्री नितिन गडकरी (वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से) एवं असम के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. हिमन्त बिस्वा शर्मा की उपस्थिति में किया गया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय–गुवाहाटी में 21 जून, 2023 को 9वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर कार्मिकों को योग के प्रति जागरूक करने के लिए योग कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया और सभी ने मिलकर योग किया। इस कार्यक्रम में सभी कार्मिकों ने अपने–अपने अनुभव भी साझा किए।

नुक्कड़ नाटक

राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड के तत्वावधान में सड़क सुरक्षा पर लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए ''जिरंस'' थिएटर द्वारा गुवाहाटी (असम) में 14 से 30 जून के बीच सड़क सुरक्षा के विषय पर हिन्दी नुक्कड़ नाटक का सफलता पूर्वक मंचन किया गया, इस नाटक का शीर्षक **''पहिया''** रखा गया, जो राज्य के अलग–अलग 5 स्थानों पर प्रस्तुत किया गया। इस नाटक से स्थानीय लोगों को जागरूक किया गया। इसे समाचार पत्रों में भी प्रकाशित करवाया गया।

दैनिक पूर्वोदय

सही दिशा, सही खबर

नुक्कड़ नाटक 'पहिया' आज और कल

गुवाहाटी, 23 जून (पू.सं.)। राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास विभाग लिमिटेड के तत्वावधान में 'सड़क सुरक्षा' पर लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए आगामी 24-25 जून को जिरंस थिएटर द्वारा नुक्कड़ नाटक 'पहिया' का प्रस्तुतिकरण किया जाएगा। जिरंस थिएटर के कार्यक्रम समन्वयक कल्पजीत सइकिया ने बताया कि विगत 14 जून को मिर्जा चारिआली में 'पहिया' का प्रस्तुतिकरण कर इस कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया था। श्री सइकिया ने बताया कि हमारी योजना राज्य भर में नुक्कड़ नाटक 'पहिया' का प्रस्तुतिकरण करना है।

क्षेत्रीय कार्यालय–देहरादून (उत्तराखण्ड)

विश्व पर्यावरण दिवस

राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड के क्षेत्रीय कार्यालय–देहरादून, उत्तराखण्ड द्वारा ''विश्व पर्यावरण दिवस'' (5 जून) के अंतर्गत कार्यालय के पदाधिकारियों एंव कर्मचारियों द्वारा पर्यावरण के प्रति जागरूक/प्रदूषण मुक्त वातावरण के लिए शपथ ली गई। इस अवसर पर पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु कार्यालय द्वारा पर्यावरण संबंधी सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी का भी आयोजन किया गया, जिसमें सभी पदाधिकारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

परियोजना अनुवीक्षण एकक–चमोली, उत्तराखण्ड द्वारा वृक्षारोपण करके पर्यावरण सुरक्षा का संकल्प लिया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय–देहरादून के अंतर्गत परियोजना अनुवीक्षण एकक–चमोली, उत्तराखण्ड द्वारा ''विश्व पर्यावरण दिवस'' के अवसर पर कार्यालय परिसर के साथ–साथ कैरिजवे के किनारे वृक्षारोपण किया गया और पर्यावरण सुरक्षा का संकल्प लिया गया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून, 2023 के 9वें संस्करण के अवसर पर राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड के क्षेत्रीय कार्यालय–देहरादून एवं इसके अन्तर्गत परियोजना अनुवीक्षण एककों–चमोली और उत्तरकाशी ने योग कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमे सभी पदाधिकारियों एंव कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

क्षेत्रीय कार्यालय–देहरादून एवं इसके अन्तर्गत परियोजना अनुवीक्षण एककों–चमोली और उत्तरकाशी में आयोजित योग दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय–शिलोंग (मेघालय)

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस :

प्रत्येक वर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। दुनिया के तमाम देश, योग के महत्व को समझते हुए योग दिवस मनाते हैं। योग का अभ्यास शरीर और मस्तिष्क के स्वास्थ्य हेतु लाभदायक है। योग शरीर को रोग व तनाव मुक्त रखता है। नियमित योगाभ्यास मन को शांति प्रदान करता है।

रा.रा.अ.वि.नि. लिमिटेड के क्षेत्रीय कार्यालय–शिलोंग (मेघालय) में और इसके क्षेत्राधिकार में आने वाले परियोजना अनुवीक्षण एककों, स्थल कार्यालयों में बड़े उत्साह के साथ योग दिवस मनाया गया।

राजभाषा कार्यशाला :–

क्षेत्रीय कार्यालय–शिलोंग (मेघालय) में दिनांक 15 जून, 2023 को पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय के हिंदी प्रोफेसर श्री राजेन्द्र के. राम. द्वारा कार्यालय में एक हिंदी कार्यशाला व व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस कार्यशाला में सभी कार्मिकों को हिंदी बोलने, हिंदी में कार्य करने, लिखने व जीवन में हमारी राजभाषा हिंदी के महत्व के बारे में व्याख्यान दिया गया। हिंदी किस प्रकार राष्ट्रीय एकता की महत्वपूर्ण कड़ी है, इस संबंध में सभी कर्मचारियों को अवगत कराया गया।

कार्यालय में दैनिक कार्य, पत्राचार, लघु टिप्पणियां लिखने में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए कार्मिकों को प्रोत्साहित किया गया एवं सभी ने इस कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाया।

राजभाषा का प्रयोग व प्रचार–प्रसार :

क्षेत्रीय कार्यालय–शिलोंग के श्री सैयद अस्लम अली, उप–महाप्रबंधक (भूमि अर्जन और समन्वय) ने कार्यालय के निकट के विद्यालय में दिनांक 07 जून, 2023 को जाकर विद्यार्थियों को हिंदी बोलने, लिखने व दैनिक जीवन में हिंदी के प्रयोग को आसान बनाने के विषय पर व्याख्यान दिया। छात्रों व शिक्षकों को हिंदी के सामान्य प्रयोगों से अवगत कराया गया तथा क्षेत्रीय कार्यालय, शिलोंग द्वारा विद्यालय के पुस्तकालय के लिए अनेक हिंदी पुस्तकें भेंट की गईं।

विश्व पर्यावरण दिवस :

क्षेत्रीय कार्यालय–शिलोंग में दिनांक 05 जून, 2023 को विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभी कर्मचारियों ने पर्यावरण संरक्षण में अपनी सक्रिय भागीदारी की शपथ ली। पृथ्वी पर जीवन की सुरक्षा के लिए पर्यावरण संरक्षण, एक अहम मुद्दा है और यह हम सभी का नैतिक दायित्व भी है। इसी दायित्व को समझते हुए सभी कार्मिकों ने पर्यावरण को सुरक्षित रखने व आसपास के सभी निवासियों को पर्यावरण संरक्षण के महत्व के प्रति जागरूक करने के लिए कार्य करने का संकल्प लिया।

विश्व रक्तदान दिवस :–

क्षेत्रीय कार्यालय–शिलोंग द्वारा दिनांक 14 जून, 2023 को विश्व रक्तदान दिवस पर सार्वजनिक क्षेत्रों पर बैनर लगाकर रक्तदान के महत्व के प्रति जनमानस को जागरूक किया गया। स्थानीय समाचार पत्रों में रक्तदान के लिए प्रेरित करने हेतु विज्ञापन भी प्रकाशित करवाया गया और रक्तदान के माध्यम से लोगों की जीवन रक्षा में सहायता के लिए लोगों को प्रेरित करने के लिए पर्चे भी बांटे गए।

क्षेत्रीय कार्यालय–जम्मू (जम्मू और कश्मीर)

योग शिविर का आयोजन :योग, भारत के सबसे प्रमुख सांस्कृतिक निर्यातों में से एक है। यह सिर्फ मुद्राओं और ध्यान से कहीं अधिक है। योग आध्यात्मिक, शारीरिक और मानसिक प्रथाओं का एक समूह है, जिसकी उत्पत्ति प्राचीन भारत में हुई थी। योग का शाब्दिक अर्थ है–जोड़ना। योग शारीरिक व्यायाम, शारीरिक मुद्रा (आसन), ध्यान, सांस लेने की तकनीकों और व्यायाम को जोड़ता है। इस शब्द का अर्थ ही 'योग' या भौतिक का स्वयं के भीतर अध्यात्म के साथ मिलन है। यह सार्वभौमिक चेतना के साथ व्यक्तिगत चेतना के मिलन का भी प्रतीक है, जो मन और शरीर, मानव और प्रकृति के बीच एक पूर्ण सामंजस्य का संकेत देता है। योग के अभ्यास का उल्लेख ऋग्वेद और उपनिषदों में भी मिलता है। रा.रा.अ.वि.नि. लिमिटेड के क्षेत्रीय कार्यालय–जम्मू में 9वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर एक योग शिविर का आयोजन किया गया। इस आयोजन में सभी अधिकारियों व कर्मचारियों ने एक साथ योगाभ्यास किया एवं स्वस्थ रहने के लिए कई योग एवं प्राणायाम सीखे।

विश्व पर्यावरण दिवस :

हर वर्ष 05 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य यह है कि पर्यावरण को लेकर लोगों को जागरूक किया जा सके। इसके साथ ही इस दिन जगह–जगह पर वृक्षारोपण किया जाता है, ताकि भविष्य में हमारी आने वाली पीढ़ी को बेहतर पर्यावरण मिले। सबसे पहले विश्व पर्यावरण दिवस मनाने की शुरुआत 1972 में की गई थी।

पर्यावरण संरक्षण की शपथ

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 05 जून, 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय–जम्मू तथा इसके परियोजना अनुवीक्षण एककों, स्थल कार्यालयों में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर सभी ने पर्यावरण संरक्षण के लिए अपनी सक्रिय भागीदारी के लिए शपथ ली।

आजादी का अमृत महोत्सव :

'आजादी का अमृत महोत्सव' अभियान के तहत क्षेत्रीय कार्यालय–जम्मू एवं इसके अंतर्गत आने वाले परियोजना अनुवीक्षण एककों द्वारा स्वास्थ्य और कल्याण, महिलाएं और बच्चे आदि विषयों पर कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न सरकारी कार्यालयों जैसे स्कूल, कॉलेज, अस्पताल आदि में पोस्टर लगाकर लोगो को स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों के प्रति जागरूक किया गया।

दु:ख, शोक, जब जो आ पड़े,
सो धैर्यपूर्वक सब सहो,
होगी सफलता क्यों नहीं
कर्तव्य पथ पर दृढ़ रहो।।

अधिकार खो कर बैठ रहना,
यह महादुष्कर्म है;
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी
दण्ड देना धर्म है।

मैथिलीशरण गुप्त

क्षेत्रीय कार्यालय–श्रीनगर (जम्मू और कश्मीर)

विश्व पर्यावरण दिवस :

क्षेत्रीय कार्यालय–श्रीनगर में कार्मिकों को पर्यावरण के प्रति सजग एवं संवेदनशील बनाने के लिए विश्व पर्यावरण दिवस, अर्थात् 05 जून, 2023 को एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें सभी कार्मिकों ने पर्यावरण संरक्षण की शपथ ली तथा कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया।

योग दिवस का आयोजन :

योग, स्वस्थ रहने का सबसे उत्तम उपाय है। योग के स्वास्थ्य लाभों से पूरा विश्व परिचित है। पूरा विश्व, योग से लाभान्वित हो, इसी उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। इस वर्ष भी रा.रा.अ.वि.नि. लिमिटेड, मुख्यालय के साथ–साथ सभी क्षेत्रीय कार्यालयों की भांति श्रीनगर कार्यालय में भी योग दिवस का आयोजन किया गया। योग के स्वास्थ्य लाभों के प्रति प्रेरित करने के लिए कार्यालय परिसर में बैनर लगाए गए। कार्यपालक निदेशक (परियोजना) ने सभी कार्मिकों को संबोधित करते हुए योग से होने वाले स्वास्थ्य लाभों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि योग भारत की धरोहर है, हमें स्वस्थ रहने के लिए दैनिक जीवन में योग को शामिल करना चाहिए। इस अवसर पर सभी कार्मिकों ने सामूहिक रूप से योगाभ्यास भी किया।

क्षेत्रीय कार्यालय–पोर्ट ब्लेयर

विश्व पर्यावरण दिवस :

प्रत्येक वर्ष की भांति, इस वर्ष भी क्षेत्रीय कार्यालय–पोर्ट ब्लेयर/परियोजना अनुवीक्षण एकक, मायाबंदर/स्थल कार्यालयों द्वारा दिनांक 05 जून, 2023 को विश्व पर्यावरण दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। विश्व पर्यावरण दिवस की शुरुआत शपथ ग्रहण के साथ हुई, जिसमें सभी कार्मिकों ने कार्यपालक निदेशक एवं उप महाप्रबंधक की उपस्थिति में पर्यावरण संरक्षण के लिए सक्रिय रूप से कार्य करते रहने और पर्यावरण सुरक्षा हेतु अन्य सभी को भी प्रेरित करने का प्रण लिया। अन्य वर्षों की भांति, इस वर्ष भी पर्यावरण दिवस के अवसर पर लोगों को पर्यावरण सुरक्षा के प्रति जागरूक किया गया और क्षेत्रीय कार्यालय के परिसर में पौधारोपण भी किया गया। सभी कर्मचारियों को प्लास्टिक की थैलियों के स्थान पर कपड़े के थैले प्रयोग में लाने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस :

9वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर, राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड के क्षेत्रीय कार्यालय–पोर्ट ब्लेयर द्वारा इसके परियोजना अनुवीक्षण एकक, मायाबंदर/स्थल कार्यालयों में दिनांक 21 जून, 2023 को योग सत्रों की एक शृंखला आयोजित की गई। कार्यपालक निदेशक (परियोजना), वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों ने एकता और उत्साह की भावना को अपनाते हुए इस कार्यक्रम में बढ़–चढ़ कर भाग लिया और जनमानस को भी अपने दैनिक जीवन में योग अपनाने के लिए प्रेरित किया।

कॉरपोरेट कार्यालय-नई दिल्ली

विश्व पर्यावरण दिवस :

पृथ्वी पर जीवन के प्रारंभ से लेकर अभी तक मानव ने अपने स्वार्थ के लिए पर्यावरण पर निरंतर कुठाराघात किया है। प्राचीन समय में लोग केवल अपनी जरूरतों के लिए प्रकृति के आदानों का प्रयोग करते थे, परंतु धीरे–धीरे मानव ने अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन किया और प्रकृति का संतुलन निरंतर बिगड़ता चला गया। लोग प्रकृति को लेकर संवेदना शून्य होते चले गए। कुछ प्रकृति प्रेमियों, वैज्ञानिकों और पर्यावरणविदों ने चेतावनी दी कि यदि हम प्रकृति के प्रति संवेदनशील नही होंगे, अपनी आदतों में सुधार नहीं करेंगे, तो पर्यावरण का विनाश तय है और वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी पर जीवन समाप्त हो जाएगा।

इसी चिंता के प्रति समाज को जागरूक करने के उद्देश्य से हर वर्ष 05 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह पर्यावरण के संरक्षण को ध्यान में रखते हुए अपनी आदतों में सुधार करे। हमें चाहिए कि हम पॉलिथीन और प्लास्टिक की वस्तुओं का प्रयोग कम से कम करें, पेड़ों का संरक्षण करें, पानी की बचत करें तथा हर प्राकृतिक संसाधन का औचित्यपूर्ण ढंग से प्रयोग करें।

राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड पर्यावरण के प्रति पूर्ण रूप से सचेत है। अपने कार्मिकों को पर्यावरण के प्रति सजग करने के लिए मुख्यालय एवं इसके सभी क्षेत्रीय कार्यालयों, अनुवीक्षण एककों एवं स्थल कार्यालयों में 05 जून, 2023 को पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलाई गई। सभी कार्मिकों ने पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय रूप से भागीदारी की एवं अपने आस–पास जागरूकता के सृजन का संकल्प लिया।

विश्व रक्तदान दिवस :

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा हर साल 14 जून को 'विश्व रक्तदान दिवस' मनाया जाता है। रक्त की ज़रूरत पड़ने पर उसके लिए पैसे देने की ज़रूरत नहीं पड़नी चाहिए, इसी उद्देश्य से हर साल लोगों को जागरूक करने के लिए विश्व रक्तदान दिवस मनाया जाता है। इसे विश्व रक्तदाता दिवस भी कहा जाता है। यह दिवस 14 जून, 1868 में पैदा हुए "एबीओ रक्त समूह" की खोज करने

वाले, नोबेल पुरस्कार विजेता, कार्ल लैंडस्टीनर के जन्मदिन की स्मृति में मनाया जाता है। यही वे वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने एबीओ ब्लड ग्रुप सिस्टम खोजने का कार्य किया है। कार्ल लैंडस्टीनर के द्वारा ब्लड ग्रुप का पता लगाए जाने से पहले तक ब्लड ट्रांसफ्यूजन बिना ग्रुप की जानकारी के होता था। इस खोज के लिए ही कार्ल लैंडस्टाईन को सन् 1930 में नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड, मुख्यालय में भी 14 जून को विश्व रक्तदान दिवस मनाया गया। सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने मानव जीवन को बचाने के लिए रक्तदान करने एवं इसके प्रति अन्य लोगों को भी जागरूक करने का संकल्प लिया।

सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी : नई चुनौतियां और संभावनाएं विषय पर हिंदी कार्यशाला :

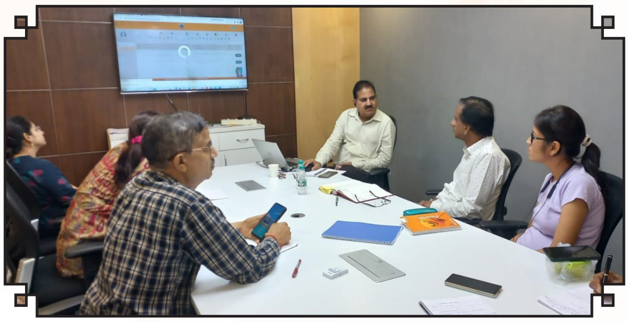

राजभाषा हिंदी के प्रयोग में कार्मिकों को पूर्ण रूप से सक्षम बनाने के लिए मुख्यालय के हिंदी अनुभाग द्वारा समय–समय पर विभिन्न कार्यशालाएं एवं व्याख्यानों का आयोजन किया जाता है।

राजभाषा कार्यान्वयन में सूचना प्रौद्योगिकी के महत्व एवं प्रयोग से कार्मिकों को अवगत कराने के उद्देश्य से दिनांक 27 जून, 2023 को **सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी : नई चुनौतियां और संभावनाएं** विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में श्री केवल कृष्ण को आमंत्रित किया गया। श्री केवल कृष्ण, राजभाषा विभाग से वरिष्ठ तकनीकी निदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करने में आने वाली तकनीकी समस्याओं एवं उनके समाधान पर उनका व्यापक अनुसंधान एवं अनुभव रहा है। इसी तकनीकी विशेषज्ञता को उन्होंने कार्यशाला में बड़ी सहजता के साथ रोचक ढंग से प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि कम्प्यूटर में हिंदी में कार्य करना सभी कार्मिकों के लिए आसान है। टंकण के लिए विभिन्न प्रकार के की–बोर्डों के साथ–साथ बोल कर टाइप करने की सुविधा भी है। राजभाषा विभाग एवं एनआईसी ने विभिन्न प्रकार के टूल एवं सॉफ्टवेयरों का विकास किया है, ताकि जो कार्य अंग्रेजी में हो सकते हैं, वे सभी आसानी से हिंदी में भी किए जा सकें। साथ ही उन्होंने स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' के बारे में भी कार्मिकों को विस्तार से बताया। कार्य की पुनरावृत्ति से बचने, समय की बचत करने और कार्य की एकरूपता के लिए कंठस्थ टूल काफी उपयोगी है। राजभाषा द्वारा समय–समय पर विभिन्न कार्यालयों के लिए इसका प्रशिक्षण दिया जाता है। सभी उपस्थित कार्मिकों ने बड़ी सक्रियता के साथ कार्यशाला का लाभ उठाया और वक्ता ने सभी जिज्ञासाओं एवं प्रश्नों का समाधान किया। प्रतिभागी कार्मिक, कार्यशाला से काफी प्रोत्साहित हुए और आगे भी इस प्रकार की तकनीकी कार्यशालाएं आयोजित करने का आग्रह किया।

विश्व योग दिवस :

योग, विश्व को भारत द्वारा दी गई एक अनुपम भेंट है। योग का प्रचार–प्रसार आज विभिन्न रूपों में पूरे विश्व में हो रहा है। जिस प्रकार योग मानव के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए

लाभकारी है, ठीक उसी प्रकार, यह हमें आध्यात्मिक शांति भी प्रदान करता है। यह न केवल हमारे शरीर और मन को एकात्म करता है, बल्कि समस्त मानव जाति को भी एकसूत्र में पिरोने का कार्य कर रहा है। इसी सूत्र को परिलक्षित करते हुए इस वर्ष विश्व योग दिवस की थीम "वसुधैव कुटुम्बकम्" थी। पूरी वसुधा को कुटुम्ब के रूप में देखने की संकल्पना की आज के विश्व को नितांत आवश्यकता है। चारों ओर जो वैमनस्य का माहौल है, उससे बाहर निकलने के लिए "वसुधैव कुटुम्बकम्" की संकल्पना संजीवनी बन सकती है।

राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड, मुख्यालय एवं इसके सभी क्षेत्रीय

कार्यालयों, अनुवीक्षण एककों एवं स्थल कार्यालयों में 21 जून, 2023 को विश्व योग दिवस का आयोजन किया गया। मुख्यालय में वरिष्ठ अधिकारियों सहित सभी कार्मिकों ने सामूहिक योगाभ्यास किया। मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान से आए एक योगाचार्य ने सभी कार्मिकों को विभिन्न योगासनों और प्राणायाम का अभ्यास कराया। प्रबंध निदेशक महोदय ने इस अवसर पर कार्मिकों को संबोधित करते हुए कहा कि, "वर्तमान तनाव भरे माहौल में स्वस्थ रहने के लिए योग सर्वोत्तम उपाय है। भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग होते हुए भी जीवन की भागदौड़ में हमने योग की महत्ता को नजरअंदाज किया है। परंतु आज भारत ही नहीं पूरा विश्व योग की ओर लौट रहा है। स्वस्थ तन और मन के लिए हमें नित्य योग करना चाहिए।"

पूर्वोत्तर के कार्यालयों में 'सड़क सुरक्षा' पर आयोजित हिन्दी नुक्कड़ नाटक की झलकियां

क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित योग दिवस की झलकियां

पाठकों से अपने सुझाव एवं प्रतिक्रियाएँ
निम्नलिखित पते/ई–मेल पर
भेजने का अनुरोध है –
संपादक,

‘सुगम पथ’

राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड
(सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार का उद्यम)
तीसरी मंजिल, पीटीआई बिल्डिंग, 4, संसद मार्ग, नई दिल्ली–110001
ई–मेलः dymgrrajbhasha@nhidcl.com | दूरभाष 011–23461600

‘सुगम पथ’ का ई–संस्करण भी
एनएचआईडीसीएल की वेबसाइट (www.nhidcl.com) पर
ई–बुक/e-Book
शीर्ष के तहत उपलब्ध है।